सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक : 4 • 5 जुलाई 2019 • मूल्य : 20 रु.

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ॥ ॥ गिरनार मंडन श्री नेमिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री वर्धमान स्वामीने नमः ॥

॥ अनंत लब्धि निधान श्री गौतमस्वामीने नमः ॥

॥ दादा जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र सूरिभ्यो नमः ॥ ॥ खरतर विरुदधारक जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः ॥

एक अनूठा - अद्वितीय - अलौकिक महा अवसर ...

प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. के संयम सुवर्ण वर्ष के अनुमोदनार्थ

पावन ऊर्जा केन्द्र अनंत आत्माओं की तपोभूमि साधना स्थली

श्री गिरनारजी महातीर्थ में

नेमि-कान्ति-मणी ९९ (नवाणुं) यात्रा महोत्सव प्रसंगे

भारत भर के सकल संघों को भावभरा आमंत्रण

* दिव्य कृपा *

प.पू. युगप्रभावक आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

* आज्ञा - आशीर्वाद एवं तारक निश्रा *

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

* पावन प्रेरणा व सान्निध्यता *

परम पूज्या प्रवर्तिनी महोदया प्रेमश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या

पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गच्छगणिनी पद विभूषिता प.पू. गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा.

प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

नवाणुं प्रारंभ
मिगसर सुदि 6
2.12.2019
सोमवार

नवाणुं स्थल : कांताबा धर्मशाला, तलेटी, गिरनार

काल महोत्सव
माघ वदि 6
16.1.2020
गुरुवार

* संयोजक *
श्रेष्ठिवर्य वीरेन्द्रमलजीसा मेहता, चेन्नई
संघवी श्री रमेशजी मुथा, चेन्नई

* आयोजक *
आदिनाथ जैन ट्रस्ट
चूले, चेन्नई

* सम्पर्क सूत्र *
Dr. मनोज गुलेच्छा - 98400 52494
संतोष बरड़ीया - 98414 50030

श्री महावीराय नमः

अनंत लब्धिनिधानाय श्री गौतम स्वामिने नमः
खरतर बिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशलसूरिभ्यो नमः
पू गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः

पधारो सा

आमंत्रण

धर्मनगरी फलोदी में

चातुर्मास प्रवेश

अवंति तीर्थोद्धारक प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी

प.पू. महत्तरा पद विभूषिता **श्री चंपाश्रीजी म.सा.** की विदुषी शिष्या

गणिनी 'मारवाड़ ज्योति' **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.**

प्रवचन प्रभाविका प. पू. साध्वी **श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा.**

प.पू. साध्वी श्री अभिनंदिताश्रीजी म.सा., प.पू. साध्वी श्री अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.सा.

प.पू. साध्वी श्री नयनंदिताश्रीजी म.सा. ठाणा 5 का

भव्य चातुर्मास प्रवेश

4 जुलाई 2019, आसाढ़ सुदी 2 गुरूवार को

प्रातः 8.00 बजे श्री गोलेच्छा देव भवन

(दादीमाँ परिसर) से

शहर के मुख्य मार्गों से बड़ी धर्मशाला में प्रवेश होगा।

आप सपरिवार इस शुभ अवसर पर पधारकर जिन शासन की शोभा बढ़ावें....

विनीत

श्री जैन खरतरगच्छ संघ, फलोदी

एवं

श्री जिनदत्तसूरि चातुर्मास कमेटी 2019 फलोदी

झवरीलाल बच्छावत मो. 9414417668, यशवर्धन गोलेच्छा मो. 8003602511

गोतमचन्द झाबक मो. 9414496230, घीसुलाल गोलेच्छा (गोपाल) मो. 9414418339

आगम मंजूषा
भगवान महावीर

सुइं च लद्धुं सुद्धं च वीरिय पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि नो य णं पडिवज्जई॥

धर्म श्रवण करने पर और उस में श्रद्धा प्राप्त होने पर भी संयमपालन में पुरुषार्थ होना अत्यंत दुर्लभ है। धर्म में रुचि रखते हुए भी कई लोग उसके अनुसार आचरण नहीं करते।

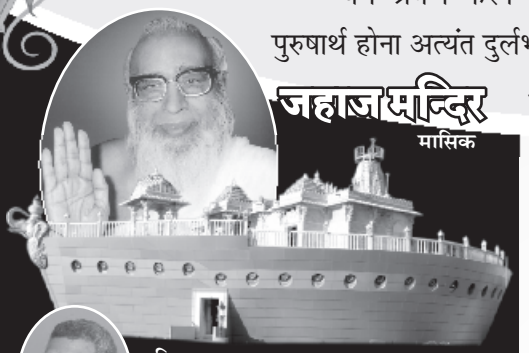

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 4 5 जुलाई 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. पतले बनो	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
4. मणिप्रभसूरि श्रमण संघ सरताज है...	मुनि मयुखप्रभसागरजी म.	08
5. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
6. पाटण में शास्त्रार्थ और विजय का वर्णन	महोपाध्याय विनयसागर	10
7. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	14
8. सत्यनिष्ठ राजा हरिश्चन्द्र	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	15
9. मणिप्रभसूरिवर संत महान	धनंजय जैन, नासिक	18
10. दीक्षा दिवस पर हमारा वंदन	वनेचंद बोथरा बन्नू शहादा	18
11.चातुर्मास के विशिष्ट दिवस	कैलाश संकलेचा	19
12. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	20
13. समाचार दर्शन	संकलित	26
14. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	42

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा
का **धूले नगर** में **चातुर्मास प्रवेश**
वि. सं. 2076 आषाढ़ सुदि 10 गुरुवार ता. 11 जुलाई 2019
को प्रातः 8 बजे
धूले संपर्क :
अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर
94227 87210

विज्ञापन हेतु हमारे मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

सुबह के चार बजे हैं। मैं मौन हूँ। विचार मुखर हो रहे हैं।

आज का दिन मेरे लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है।

आज मैं मुस्कुरा भी रहा हूँ!

और उदास भी हो रहा हूँ!

विचारों के परिणाम स्वरूप चित्त की इन दोनों दशाओं का मैं खुलकर अनुभव कर रहा हूँ।

आज का दिन महत्त्वपूर्ण इस अर्थ में कि आज ही के दिन 46 वर्ष पूर्व मेरी, बहिन की व मां की भागवती दीक्षा संपन्न हुई थी।

मैं इन क्षणों में 46 वर्षों के समस्त पड़ावों की यात्रा कर रहा हूँ। कोरी यात्रा नहीं, समीक्षा कर रहा हूँ। समीक्षा में मैं कमजोर पलों का अवलोकन अतिसूक्ष्मता से कर रहा हूँ ताकि भविष्य के लिये सावधानी का संकल्प कर सकूं।

हाँ! प्रसन्नता से भर रहा हूँ उन क्षणों को याद कर, जो क्षण मेरी जागृति के थे।

उदास हो रहा हूँ उन क्षणों को याद कर, जो क्षण मेरी बेहोशी के साक्षी बने थे।

हाँलाकि मैं स्वीकार करता हूँ कि जागृति के वे क्षण बहुत अल्प थे। अधिकतर समय तो बेहोशी में ही बीता है।

वे क्षण भी मेरे बेहोशी के ही क्षण थे, जिन क्षणों में मैं उदास होने के स्थान पर प्रसन्न हुआ था।

और मेरी आंखों से आंसु बह निकले हैं। अंधेरा था। कोई देखने वाला न था। यही ठीक था। क्योंकि आंसू कभी भी दिखाने के लिये नहीं होते। आंसू तो केवल बहाने के लिये होते हैं... पूर्ण एकान्त में!

मेरा एकान्त मुझे बेहोशी के क्षणों को याद दिला रहा था। मैं कितना पर-भाव में जीया!

लोगों के सम्मुख तो मुझे जागृति के क्षणों को ही याद करना था। ताकि चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दे।

कुछ घंटों बाद जय-जयकार की आवाजें मेरे कानों में पड़ रही थी। बधाया जा रहा था। चेहरे पर प्रसन्नता थी। पर यह प्रसन्नता बाहर में हो रही उस घटना के कारण नहीं, अपितु वह अतीत की जागृति की स्मृतियों का परिणाम थी।

हे प्रभो! आज के दिन मैं आपसे यही याचना करता हूँ... बस! ऐसी ही समझ देना... ऐसी ही बुद्धि देना...! ऐसी ही जागृति देना...!

सोलह सतियाँ
कथानक
11

विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

कांपिल्यपुर का भव्य राजभवन ! एक अनोखी चमक द्रुपद पुत्री के चेहरे पर छायी हुई है। पूरी नगरी तोरणद्वारों से नयी दुल्हन की भाँति सज चुकी है। कल ही राजकुमारी द्रौपदी का स्वयंवर होने जा रहा है।

कितनी हलचलें....कितने अनुमान....कितने विचार सैंकड़ों, हजारों हृदयों में चक्र की भाँति चक्कर लगा रहे हैं।

राजकुमारी सखियों से घिरी हुई हैं....हाथों पर रच रही है मेहंदी...आँखों में एक आशा और हृदय में एक प्रकम्पन है।

न जाने कौन होगा मेरा प्राणेश्वर....! इस चर्चित स्वयंवर में मुझे पाने के लिये पहुँच रहे हैं....पहुँच गये हैं, युवराज, राजकुमार, राजा-महाराजा! सोचते सोचते द्रौपदी नयी दुनिया के सपनों में झुलने लगी है। उसकी रात करवटें बदलते बीती हैं।

दोराहे....चौराहे पर जहाँ देखो, वहाँ गोष्ठी चल रही है....। इधर शताधिक प्रत्याशी कांपिल्यपुर के अतिथि बने हुए हैं। उनकी आवभगत में कहीं कोई कमी नहीं है।

आशा-निराशा, हार-जीत, पता नहीं.....कितने कितने भावों से उनका हृदय मुखर हो रहा है। इष्ट की प्रार्थना करके वे शयन कर चुके हैं। आधी रात होते-होते मुख्य मार्ग भी सूनसान हो गये हैं। समय का पहिया अपनी गति से एक निश्चित गन्तव्य की ओर बढ़ता जा रहा है। कितनी ही संवेदनाओं, प्रवाहों, विचारों, हलचलों, प्रकम्पनों में रात व्यतीत हुई है।

पौ फटी। फिर नये सूरज ने नयी आशाओं का संचार किया। द्रौपदी ने जिनप्रतिमा के सम्मुख नमुत्थुणं के द्वारा वंदना की।

युवराज, राजा और महाराजाओं ने सुन्दर परिधान धारण किये। अपने तलवार, भाला, धनुष आदि को संभाला।

प्रथम प्रहर के पूर्ण होते होते स्वयंवर की प्रारंभिक गतिविधियों का प्रारंभ हो गया। समस्त प्रत्याशियों ने ससम्मान अपना स्थान ग्रहण किया। द्रुपदराज ने अपनी ओजस्वी व शिष्टाचार से परिपूर्ण शब्द शैली से उनका सादर बहुमान करने के उपरान्त मूल प्रस्ताव को प्रस्तुत किया-

'राजकुमारी द्रौपदी, जो विश्व की अपने आप में अनिंद्य सुन्दरी है, इतना ही नहीं, वह शील, सदाचार और संस्कार की जीवंत प्रतिमा है। उसके जीवन-साथी के चयन का महोत्सव एक खुशी का अवसर है तो आशामिश्रित पराक्रम का संगम भी है।

उसी पराक्रमी, अनुपम साहसी व्यक्तित्व के गले में राजकुमारी द्रौपदी वरमाला आरोपित करेगी जो राधावेध की परीक्षा में खरा उतरेगा।' राधावेध के संदर्भ में जिज्ञासुओं के नयनों में तैरती जिज्ञासा को समाहित करते हुए द्रुपद बोले-आप देख रहे हैं कि महोत्सव मण्डप के ठीक मध्य में तेल से आपूर्ण पात्र है, उसके ऊपर एक निश्चित दूरी पर सौ पुतलियाँ चक्कर लगा रही हैं जो कि तेल-कुण्ड में स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित हो रही हैं। जो प्रत्याशी नीचे तेल कुण्ड पर दृष्टि एकाग्र करता हुआ उन पुतलियों में से राधा नामक पुतली का वेधन करेगा, वो ही राजकुमारी का हृदय हार बनेगा।

अनेक राजा आए-गये पर कोई भी राधावेध नहीं कर पाया। दुर्योधन भी प्रत्याशियों की पंक्ति में विराजमान था। अहंकार की रेखाएँ उसके चेहरे पर स्पष्टतया नाच रही थी। क्रमशः उसका क्रम भी आया। मूंछों पर ताव देता हुआ वह उठा पर दूसरे ही पल उसका उत्साह ठण्डा पड़ गया। राधावेध में उसे करारी हार का सामना करना पड़ा। इसी क्रम में पाँच पाण्डवों में से बेजोड़ धनुर्धर अर्जुन की बारी आयी।

उसने द्रुपदराज को प्रणाम किया। ज्येष्ठ बंधुद्वय युधिष्ठिर व भीम का आशीर्वाद लिया। नकुल-सहदेव की

शुभकामनाएँ झेली। सधी चाल से तेल कुण्ड के पास पहुँचा। इष्ट देव का स्मरण किया। वातावरण स्तब्ध हो गया।

अर्जुन अपनी सफलता के प्रति सर्वथा निश्शंक था। एकाग्र दृष्टि....स्थिर हृदय....विश्वास से भरपूर मन। सभा में उपस्थित मन आशा-निराशा, आस्था-संदेह जैसे भावों के घेरे में थे तब अर्जुन ने आशा, आस्था और एकाग्रता को साधते हुए राधा नामक पुतली की आँख की ओर बाण चला दिया। दूसरे ही पल बाण ने लक्षित का वेधन कर लिया।

धनु-साधना सफलकाम हुई।

वर्षों की मेहनत जैसे आज कृतकृत्य हुई।

सभा मण्डप में विराजमान हजारों व्यक्ति जय जयकार कर उठे। 'पाण्डुपुत्र राजकुमार अर्जुन की जय हो।'

यद्यपि अर्जुन का यह अनुपम सफल कदम दुर्योधन को सर्वथा अप्रिय लग रहा था तथापि उसके विरूद्ध कोई भी कार्यवाही करने में वह सर्वथा असक्षम था। सखियों से घिरी राजकुमारी द्रौपदी ने अर्जुन की दिशा में कदम बढ़ा दिये।

गंभीर चाल....झुके नयन....लरजते होंठ। निकटस्थ सखी के कर में स्थित पुष्पथाल में से वरमाला उठायी। द्रौपदी ने एक पल के लिये अर्जुन को निहारा।

चमकता ललाट....विशाल वक्षस्थल....गौर बदन! प्राणेश्वर! आज मैं आपको वैसे ही समर्पित.... रोम रोम से अर्पित हो रही हूँ जैसे समन्दर को नदियाँ.... पानी को मीन....! इन्हीं भावों को नयनों से प्रकट करती हुई स्नेह और समर्पण पूरित हृदय से द्रौपदी ने अर्जुन के गले में वरमाला डाल दी।

दूसरे ही पल जैसे एक चमत्कार हुआ। अर्जुन के गले में जैसी माला झूल रही थी, वैसी ही माला युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव के गले में भी झूलने लगी। यह आश्चर्यजनक दृश्य देखकर सभी की आँखें फटी की फटी रह गयी। द्रुपद चिन्तातुर हो गये। कोई भी इसके रहस्य को समझ नहीं पाये, अर्जुन और द्रौपदी स्वयं अनभिज्ञ थे।

सौभाग्य से उसी समय अतीन्द्रिय ज्ञानी मुनिवर का राजसभा में प्रविष्ट होना हुआ।

वासुदेव श्रीकृष्ण ने समस्या को समाहित करना चाहा। मुनीन्द्र बोले-वासुदेव चिन्तित होने की कोई जरूरत नहीं है। यह पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।

इन्द्रप्रस्थ के सभा भवन-उद्घाटनों के समारोह में पहुँची द्रौपदी कक्ष में मखमली शय्या पर बैठी थी। वातायन से प्रकृति की सुरम्य सुषमा का आनंद उठाती हुई अतीत के इन पृष्ठों को कब पढ़ने लगी, उसको खुद को ख्याल नहीं रहा। अतीत से उसकी कड़ी तब टूटी जब सम्मुख खड़े दूत के शब्द उसके कर्णपटल से टकराये-हस्तिनापुर की महारानीजी ! आपको संसद कक्ष में याद किया जा रहा है। आप शीघ्र पधारे।

द्रौपदी ने कहा- मैं राजस्वला हूँ, इसलिये नहीं आ सकती।

द्रौपदी के इंकार को सुनकर दुर्योधन गुस्से से भर गया। दासी होकर भी द्रौपदी का इस प्रकार का व्यवहार कि वह दुर्योधन के आदेश की अवमानना करें । उसने दुर्शासन को भेजा द्रौपदी के स्पष्ट इन्कार को सुनकर दुर्शासन ने कहा-एक दासी की इतनी औकात कि वह युवराज को इंकार कर दें?वह उसकी खुली केशराशि को पकड़कर घसीटता हुआ राजसभा की ओर ले जाने लगा।

संसद कक्ष के द्वार पर उपस्थित द्रौपदी को देखकर दुर्योधन की आँखें एक उजास से भर गयी।

घोर सन्नाटा ! ऐसी निस्तब्धता कि सुई के गिरने की भी आवाज सुनायी दे जाये।

द्रुपदपुत्री की आँखें यकायक भवन का अवलोकन करने लगी। प्रथम पंक्ति में विराजमान पितामह भीष्म, द्रौणाचार्य, धृतराष्ट्र, विदुर आदि वय:स्थिर संसद की शोभा में वृद्धि कर रहे हैं। उसके ठीक पृष्ठ भाग में जो दूसरी पंक्ति है, उसमें दु:शासन, शकुनि, कर्ण आदि उपस्थित हैं। उसके पीछे की पंक्तियों में सेनापति, पुरोहित, खजांची आदि मंत्रीमण्डल के वरिष्ठ पदाधिकारी, छोटे-बड़े राज्यों के राजा, अन्य विशिष्ट व्यक्तित्व आसीन हैं, उनके एक तरफ युधिष्ठिर, भीम आदि पांचों कुन्तीपुत्र बैठे हैं और सर्वोच्च विशाल सिंहासन पर दुर्योधन अवस्थित है।

(क्रमश:)

चातुर्मास : कषाय-मुक्ति का पर्व

'पतले बनो'

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

चातुर्मास का स्वर्णिम काल।

देशना का अविरत/अविरल प्रवाह।

आराधना-साधना की तेजस्विता भरी होड़।

तप-जप शक्ति का श्रद्धा से परिपूर्ण दर्शन।

मोक्ष-रूप एक मात्र आकांक्षा की अभिव्यक्ति।

जिन मंदिरों में पूजा करनेवाले भक्तगणों की लंबी पंक्तियाँ।

प्रतिक्रमण में श्रावकों की विशाल उपस्थिति।

प्रवचन में अपार जन-समूह।

तपश्चर्या का गली-गली में जमा रंग।

कहीं सिद्धि-तप की सीढ़ियाँ चढ़ी जा रही हैं।

कहीं मासक्षमण की भव्य भावना के साथ उपवास पर उपवास के प्रत्याख्यान किये जा रहे हैं।

कहीं अट्ठम के पारणे अट्ठम की आराधना चल रही है तो कहीं ५००-५०० आयंबिल की लगातार साधना चल रही है।

कहीं संपूर्ण चातुर्मास तक एकासण करने का संकल्प प्रकट हो रहा है।

प्रतिदिन स्वाद ले लेकर कंदमूल खाने वाला व्यक्ति भी चातुर्मास के तप:पूत दिनों में उसका सर्वथा त्याग कर देता है। यह महिमा चातुर्मास की है।

चातुर्मास के दिन आराधना-साधना के दिन हैं।

प्रश्न होता है- क्या बाह्य क्रियाएँ करने मात्र से आराधना का लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है ?

स्पष्ट समाधान है- नहीं। बाह्य क्रियाएँ तो आभ्यन्तर मन को मोड़ने का एक पूर्ण उपक्रम है। बिना बाह्य क्रियाओं के आभ्यन्तर परिवर्तन असंभव है। लेकिन बिना आभ्यन्तर रूचि के मात्र बाह्य क्रियाएँ कर्म-निर्जरा का निमित्त नहीं बनती।

बाह्य क्रियाओं के साथ आभ्यन्तर समता का परिपूर्ण सम्मिलन आवश्यक है।

हकीकत में बाह्य क्रियाओं - तप - जप आदि सभी का एक मात्र यही उद्देश्य है - कषाय मुक्ति!

कषायों की काया को कृश करना ही आराधना का उद्देश्य है और यही आराधना का परिणाम है।

गुरू ने शिष्य को आदेश दिया- जाओ और सुखाओ।

शब्दों के रहस्य को जाना नहीं और शिष्य ने तप करना प्रारंभ किया। लम्बा तप किया।

शरीर हल्का हो गया।

शिष्य ने गुरू चरणों में उपस्थित होकर पूछा- क्या मेरी साधना पूरी हो गई ?

गुरू ने शिष्य की काया को देखा, साथ ही अपनी वेधक दृष्टि से उसके अंतर को भी झांका।

उत्तर दिया- "नहीं, और पतले करो।"

शिष्य को थोड़ी झुंझलाहट तो हुई पर आदेश को अनूल्लंघनीय मानकर पुन: जंगल में जाकर घोर तप करने लगा।

पेट जैसे पीठ से चिपक गया।

लम्बी तपश्चर्या के बाद गुरू-चरणों में पुन: उपस्थित होकर अपनी साधना का परिणाम फरमाने का निवेदन किया।

गुरू ने एकदम पतले पड़े शिष्य के शरीर को देखा। गहराई से उसके अन्तर्मन का निरीक्षण किया। चेहरे पर असंतुष्टि के भाव उभर आये।

आदेश दिया- जाओ ! और थोड़ा कृश करो।

शिष्य का मन बेचैनी से भर गया। अपनी व्यग्रता को बताने होठों को खोलने की कोशिश करने लगा। लेकिन गुरू का आदर स्वीकार करके अपने मन की बात मन में ही रख कर जंगल की ओर बढ़ चला। मन बहुत ही व्यग्र था। आखिर

कितना पतला बनूँ ?सारा शरीर सूखकर कांटा-सा हो गया है।

हड्डियों पर चमड़ी का मात्र आवरण शेष है, मध्य का मांस तो गायब हो चुका है।

फिर भी तप किया।

पुनः गुरू के चरणों में उपस्थित होकर कहा- भगवन् ! क्या अब भी मेरी साधना अधूरी है।

मैंने आपके आदेशानुसार अपने आपको एकदम पतला कर दिया, सुखा दिया।

गुरु ने कहा- हाँ! अभी भी तुम्हारी साधना पूरी नहीं हुई। तुम्हें और पतला होना है।

शिष्य बिना बोले रह न सका। भीतर के कषाय ने जोर मारा और वह गुस्सा भरकर बोल पड़ा- आखिर कितना पतला करूँ?यह देखिये- यों कहकर एक हाथ से दूसरे हाथ की एक अंगुली को मरोडा, तड़... तड़... की आवाज से अंगुली टूट गई। अब तो सिवाय हड्डियों के और कुछ बचा ही नहीं है।

गुरू ने गंभीर स्वर में कहा- मेरी बात का रहस्य तूं नहीं समझा। मैंने ''पतला'' करने का निर्देश जरूर दिया लेकिन शरीर को नहीं। कषाय को क्षीण करने का मेरा आदेश था।

शरीर को क्षीण करना तप का मूल उद्देश्य नहीं है। कषाय-निरोध ही तप का लक्ष्य/परिणाम है।

चातुर्मास की अवधि कर्म निर्जरा के लिये है। इस उद्देश्य की पूर्ति तभी हो सकती है, जब हम हर परिस्थिति में नियंत्रित रहें। कषाय-मुक्त मन ही निर्जरा का आधार है।

मणिप्रभसूरि श्रमण संघ सरताज है...

—मणिगुरु चरणरज मुनि मयूखप्रभसागरजी म.

शासन के इस कोहिनूर को वंदन लख-लख बार है
खरतरगच्छ के मुकुट मणि को वंदन बार हजार है ।।
जिनमणिप्रभ सूरिराज को झुकता सकल समाज है
ऐसे अधिपति मणिप्रभसूरि श्रमण संघ सरताज है ।।1।।
तेरह बरस की अल्प आयु में छोड़ दिया संसार है
मोकलसर का वासी त्यागी यह लुंकड़ परिवार है ।।
शत्रुंजय की पुण्य भूमि पर सपन किया साकार है
भाई बहन संग माताजी ने लीना संयम भार है ।।2।।
कांतिसूरि के शिष्य बने मुनि मणिप्रभ नाम महान है
मात रतनमाला है बहिना विद्युत्प्रभाजी नाम है ।।
दीक्षित हो शिक्षा पाने का चित्त उठा अरमान है
संस्कृत प्राकृत आगम टीका का पाया संज्ञान है ।।3।।
वत्सलता से प्रेमभाव से हृदय पूर्ण सराबोर है
चेहरे पर मुस्कान अनूठी छटा-घटा कुछ और है ।।
अम्मावस के अंधेरे में आप नई इक भोर है
विस्तृत कीर्ति मणि गुरुवर की चिहूँ ओर है ।।4।।

जिनशासन में खरतर गण के आप बड़े सरकार है
श्रमण श्रमणी भगवंतों की नैया खेवनहार है ।।
भक्तों के सपनों को करते आप सदा साकार है
अमृत पूरित वचन श्रवण जीवन का एक उपहार है ।।5।।
खरतर गण के सम्मेलन में क्रांति का संचार हुआ
साधु साध्वी गण में अनुशासन भाव विस्तार हुआ ।।
त्याग समर्पण से आप्लावित भावित जीवन का कण-कण
श्रद्धा भक्ति से चूमें हम गुरुदेव के पूत चरण ।।6।।
खरतरगच्छ युवा परिषद् से जागृति का संचार है
फैले युवकों महिलाओं में जैनत्व के संस्कार है ।।
केयुप शाखाओं का पूरे भारत में विस्तार है
श्रद्धा प्रेम समर्पण भक्ति की बहती रसधार है ।।7।।
अवन्ति उज्जयिनी का हुआ जीर्ण उद्धार है
जहाज मंदिर, मयूर कच्छप गजमंदिर श्रीकार है ।।
घंट सुघोषा, कुशल वाटिका कलाकृति मनहार है
ऐसे मंदिर तीर्थ आपकी कल्पना का सार है ।।8।।

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सन् 1954 का पूज्यश्री का आर्वी नगर का चातुर्मास ऐतिहासिक रहा था। मूल जैसलमेर निवासी परिवार यहाँ बड़ी संख्या में रहते हैं। उनमें मुख्यतया संखलेचा गोत्रीय परिवार हैं। यहाँ दादावाडी का निर्माण संखलेचा परिवार द्वारा ही संपन्न हुआ था, जिसकी प्रतिष्ठा पूज्यश्री ने मई महिने में चातुर्मास से पूर्व करवाई थी।

पूज्यश्री की युवावस्था थी। वे प्रौढ अवस्था की ओर बढ रहे थे। आर्वी चातुर्मासक ेस मयउ नकीउ म्र4 2-43व र्षक ीथ ी। वाणी में जोश था... काया में सक्रियता थी... हृदय में जिनवाणी का वास था!

पूज्यश्री के प्रवचनों में आध्यात्मिकता, सामाजिकता आदि बहुत से विषयों का विश्लेषण होता था। समाज में चल रही कुरीतियों को दूर करने के लिये जोरदार शब्दों में प्रेरणा प्रदान करते थे। जैन धर्म को जन-जन का धर्म बनाने के लिये पूज्यश्री के अधिकतर प्रवचन सार्वजनिक हुआ करते थे।

इस चातुर्मास में आर्वी संघ की साधर्मिक भक्ति बहुत ही अनुमोदनीय रही थी।

पूज्यश्री की प्रेरणा प्राप्त कर संखलेचा परिवार के हृदय में महामंगलकारी उपधान तप की आराधना कराने का भाव प्रकट हुआ। लाभ प्राप्त किया श्री राजमलजी संखलेचा परिवार ने!

ता. 10 अक्टूबर 1954 से उपधान तप का प्रारंभ हुआ। श्री राजमलजी संखलेचा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तुरीबाई पूज्यश्री के अनन्य भक्त थे। न केवल उन्होंने उपधान तप का आयोजन किया अपितु वे स्वयं इस तप में बिराजमान हुए। पूज्य गुरुदेवश्री के हाथों से मोक्ष माला धारण कर परम आनंद की अनुभूति की।

मेरे पास संग्रह में इस माला का फोटो है। इस चित्र में पूज्यश्री स्वयं राजमलजी को मोक्ष माला धारण करवा रहे हैं।

यहाँ चत्रज बस ंग्रहम ेंम ैंनेद ेखा था तब पूज्यश्री से पूछा था कि इस फोटो में आप स्वयं माला धारण करवा रहे हैं। इसका रहस्य क्या है!

मेरे प्रश्न का हार्द समझ कर गुरुदेवश्री ने फरमाया- उपधान तप की मोक्ष माला गुरु महाराज ही धारण करवाते हैं। ऐसा शास्त्रों का विधान है। पूज्य कविसम्राट् श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. ने भी उपधान तप की स्तुति में लिखा है-

'गणनायक पासे पहिरे शिव पद माल ।'

इन वर्षों में इस परम्परा में व्यावहारिक रूप से परिवर्तन हुआ दिखाई देता है। पूज्य गुरु भगवंत अभिमंत्रित कर माला परिवारजनों को प्रदान करते हैं फिर वे माला धारण करवाते हैं।

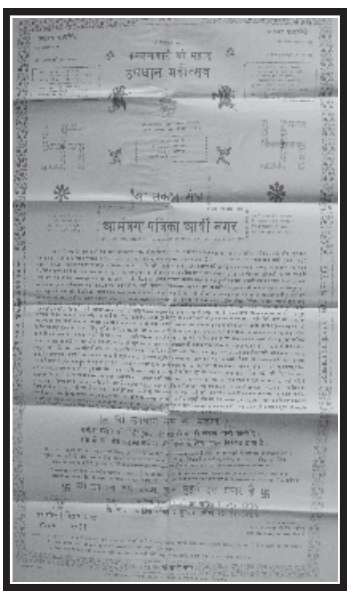

पाटण में शास्त्रार्थ और विजय का वर्णन

–महोपाध्याय विनयसागरजी

आचार्य प्रवर वर्धमानसूरि चैत्यवासी आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य थे। ये जिनचन्द्राचार्य चौरासी स्थानों के अधिपति/मठपति थे। वर्धमान-सिद्धान्तों की वाचना को ग्रहण करते हुए जिनमंदिर/प्रतिमा की चौरासी आशातनाओं को पढ़कर चैत्यवास से विरक्त हो गये और गुरु से अनुमति लेकर श्री उद्योतनसूरि के समीप सम्यक् प्रकार से आगम तत्त्वों की जानकारी प्राप्तकर उनके पास उप-सम्पदा ग्रहण की। उद्योतनसूरि ने उन्हें पूर्णतय: मेधा-सम्पन्न और योग्य जानकर आचार्य पद पर स्थापित किया।

दुर्लभ महाराजा की राजसभा-पाटण

वर्धमानसूरि ने वेद-विद्या सम्पन्न श्रीधर और श्रीपति को अपना शिष्य बनाया। जिनेश्वर और बुद्धिसागर नाम रखा और क्रमश: इनको आचार्य पद भी प्रदान किया। अन्य अनेक शिष्यों को भी दीक्षित किया।

वर्धमानसूरि चैत्यवास त्याग कर सुविहित बने थे अत: चैत्यवास शल्य की तरह उनके हृदय में सदा खटकता रहता था। जब वे दृष्टिपात करते थे तो सारा देश चैत्यवासमय दृष्टिगोचर होता था। गुजरात में चैत्यवासियों की दुर्दम्य अधर्म लीला देखकर वे सदा यही चाहते थे कि 'गुजरात से चैत्यवास को धूलि-धूसरित किया जाए।' इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर वे गुजरात के पाटण नगर अणहिलपुर पत्तन पहुँचे, जहाँ उन्हें रहने को 'स्थान न मिला' न खाने को 'आहार-पानी'। राजपुरोहित सोमेश्वर ने मुनि जिनेश्वर की वाग्मिता, वैदुष्य, चारों वेदों पर आधिपत्य/अधिकार देखकर उन्हें अपने आवास में ठहराने को स्थान दिया और भोजन-पानी की व्यवस्था की।

चैत्यवासियों को आचार-सम्पन्न साधुओं का नगर प्रवेश और राजपुरोहित द्वारा स्थान देना काँटे की तरह खटकने लगा और उन्होंने अनेक प्रकार के षड्यन्त्र रचकर उनको गुजरात की सीमा से बाहर निकालने का प्रयत्न भी किया। राजपुरोहित सोमेश्वर द्वारा राजा दुर्लभराज को समझाने पर शास्त्रार्थ का समय निश्चित किया गया। चैत्यवासियों के प्रमुख आचार्य सूराचार्य आदि शास्त्रार्थ के लिए पंचासरा पार्श्वनाथ में आए। महाराजा दुर्लभराज ने इस सभा की अध्यक्षता ग्रहण की। इधर से वर्धमानसूरि भी जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि के साथ सभा-स्थल पर पहुँचे। राजा ने दोनों का सम्मान किया।

वर्धमानसूरि की नि:संगता और साधुत्व से दुर्लभराज यह सोचकर प्रसन्न भी हुए कि ये वास्तव में विशुद्ध आचार-पालक साधुगण हैं, षड्यंत्रकारी गुप्तचर नहीं।

शास्त्रार्थ का विषय था – साधुजनों का आचार कैसा हो?

इधर चैत्यवासियों की ओर से शास्त्रार्थ के लिए सूराचार्य को अधिकृत किया गया और वर्धमानसूरि ने अपनी ओर से जिनेश्वसूरि को अधिकार प्रदान किया। जिनेश्वरसूरि ने आगम ग्रंथों – दशवैकालिक, आचारांग आदि शास्त्रों के आधार से अप्रतिबद्धविहारी अप्रमत्त साधुजनों के आचार-विचार को प्रतिष्ठित किया। आगमिक उल्लेखों के सामने चैत्यवासी आचार्य निरुत्तर हो गये। विजयपताका वर्धमानसूरि को प्राप्त हुई। कहा जाता है कि महाराजा दुर्लभराज ने 'आपका पक्ष खरा है, सत्य है' इस विरुद से सम्मानित किया। इस विजय के कारण समस्त गुर्जर-धरा पर

लगे राजकीय प्रतिबन्ध समाप्त हो गये और सुविहित साधु अपनी श्रमणचर्या का पालन करते हुए सुखपूर्वक विचरण करने लगे। वसतिवास प्रारम्भ हुआ। महाराजा दुर्लभराज के मुख से विजय सूचक 'खरा' शब्द ही 'खरतरगच्छ' का आविर्भावक बना।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

कई विद्वान् परम्पराग्रह इत्यादि कारणों से कुछ प्रश्न खड़े करते हैं-

१. महाराजा दुर्लभराज के समक्ष शास्त्रार्थ हुआ ही नहीं।

२. प्रभावकचरित्रकार प्रभाचन्द्रसूरि प्रभावकचरित के अन्तर्गत सूराचार्य चरित्र में इस शास्त्रार्थ का उल्लेख भी नहीं करते हैं।

३. खरतरगच्छ पट्टावलियों में इस शास्त्रार्थ का जो सम्वत् दिया है, वह भ्रामक है।

४. जिनेश्वरसूरि के शिष्यों ने विजयसूचक कहीं 'खरतर' शब्द का उल्लेख नहीं किया।

इन प्रश्नों का समाधान संक्षिप्त पद्धति से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१. युगप्रधान जिनदत्तसूरि (समय ११३७ से १२११ तक) स्वप्रणीत गणधरसार्द्धशतक गाथा (६४ से ६८), सुगुरुपारतंत्र्यस्तव गाथा (९ से ११) और सुगुरुगुणस्तव सप्ततिका (गाथा ४९ से ५१) में स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि अणहिलपुर पाटण में महाराजा दुर्लभराज की राज्यसभा में साध्वाचार को लेकर शास्त्रार्थ हुआ और इस विजय के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण गुर्जर धरा में वसतिवास का प्रचार हुआ।

श्री सुमतिगणि ने गणधरसार्द्धशतक बृहद्वृत्ति में इन श्लोकों की व्याख्या करते हुए शास्त्रार्थ और विजय का पूर्ण वर्णन दिया है।

श्री जिनपालोपाध्याय ने खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली (रचना सम्वत् १३०५) में भी इस घटना का सांगोपांग वर्णन दिया है।

श्री प्रभाचन्द्रसूरि भी प्रभावक चरित के अन्तर्गत अभयदेवसूरि चरित में (पद्य ४४ से ८९ तक) इस शास्त्रार्थ घटना का सांगोपांग उल्लेख करते हैं कि अणहिलपुर पत्तन में दुर्लभराजा की सभा में शास्त्रार्थ हुआ था और इस विजय के बाद समस्त गुजरात में वसतिवास की परम्परा स्थापित हुई थी।

अत: स्पष्ट हो जाता है कि दुर्लभराज की राजसभा में यह शास्त्रार्थ अवश्य हुआ था।

२. प्रभाचन्द्राचार्य का प्रभावकचरित के अन्तर्गत सूराचार्य चरित में इस शास्त्रार्थ की घटना का कहीं उल्लेख नहीं है। इस प्रसंग में ये मौन ही रहते हैं। प्रभावकचरित की रचना वि०सं० १३३४ में हुई है। वे इस सूराचार्य चरित में इस घटना का उल्लेख नहीं करते। इस सम्बन्ध में पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री मुनि 'जिनविजयजी' कथाकोश प्रकरण की प्रस्तावना पृष्ठ ४१ में मेरे मत का समर्थन करते हुए लिखते हैं-

'यों तो प्रभावकचरित में सूराचार्य के चरित का वर्णन करने वाला एक स्वतंत्र और विस्तृत प्रबन्ध ही ग्रथित है जिसमें उनके चरित की बहुत सी घटनाओं का बहुत कुछ ऐतिहासिक तथ्यपूर्ण वर्णन किया गया है; लेकिन उसमें कहीं भी उनका जिनेश्वर के साथ इस प्रकार के वाद-विवाद में उतरने का कोई प्रसंग वर्णित नहीं है। परंतु हमको इस विषय में उक्त प्रबन्धकारों का कथन विशेष तथ्यभूत लगता है।

प्रभावकचरित के वर्णन से यह तो निश्चित ही ज्ञात होता है कि सूराचार्य उस समय चैत्यवासियों के एक बहुत प्रसिद्ध और प्रभावशाली अग्रणी थे। ये पंचासर पार्श्वनाथ के चैत्य के मुख्य अधिष्ठाता थे। स्वभाव से बड़े उदग्र और वाद-विवाद प्रिय थे। अत: शास्त्राधार की दृष्टि से यह तो निश्चित ही है कि जिनेश्वराचार्य का पक्ष सर्वथा सत्यमय था अत: उनके विपक्ष को उसमें निरुत्तर होना स्वाभाविक ही था। इसलिये इसमें कोई सन्देह नहीं कि राजसभा में चैत्यवासी पक्ष निरुत्तरित होकर जिनेश्वर का पक्ष राजसम्मानित हुआ और इस प्रकार विपक्ष के नेता का मानभंग होना अपरिहार्य बना। इसलिये, संभव है कि प्रभावकचरितकार को सूराचार्य के इस मानभंग का, उनके चरित में कोई उल्लेख करना

अच्छा नहीं मालूम दिया हो और उन्होंने इस प्रसंग को उक्त रूप में आलेखित कर, अपना मौनभाव ही प्रकट किया हो।'

अत: यह ध्रुव सत्य है कि आचार्य जिनेश्वर का सूराचार्य के साथ दुर्लभराज की राज्यसभा में शास्त्रार्थ हुआ और उसमें सूराचार्य पराजित हुए।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

3. सम्वत् भ्रामक है-

अर्वाचीन पट्टावलिकारों ने पट्टावलियों में कहीं १०८० सम्वत् का उल्लेख किया है तो किसी ने १०२४ का। यह वस्तुत: श्रवण परम्परा पर आधारित है। इसको आधार मानकर कुछ लोग समय के विषय में निरर्थक ही विवाद उपस्थित करते हैं। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि युगप्रधान जिनदत्तसूरि, जिनपालोपाध्याय, सुमतिगणि, प्रभावकचरितकार आदि मौन हैं। इसका कारण भी यही है कि सब ही प्रबन्धकारों ने जनश्रुति, गीतार्थश्रुति के आधार से प्रबन्ध लिखे हैं और वे भी सब १०० और २५० वर्ष के मध्य काल में। वस्तुत: समग्र लेखकों ने संवत् के सम्बन्ध में मौनधारण कर ऐतिह्यता की रक्षा की है अन्यथा संवत् के उल्लेख में असावधानी होना सहज संभाव्य था। महाराजा दुर्लभराज का राज्यकाल १०६६ से १०७८ तक का माना जाता है, उसी के मध्य में यह घटना हुई है।

4. जिनेश्वरसूरि के शिष्यों ने विजयसूचक कहीं 'खरतर' शब्द का उल्लेख नहीं किया -

वर्धमानसूरि और जिनेश्वरसूरि ने महाराजा दुर्लभराज के मुख से निकले हुए 'आपका मार्ग खरा है', इस विरुद को विशेष महत्त्व नहीं दिया और उसके स्थान पर उनके समय से सुविहित शब्द का प्रचलन हुआ। सुविहित अर्थात् भगवान महावीर प्रतिपादित आगम ग्रंथ सम्मत श्रमणाचार का सम्यक् प्रकार से पालन करने वाले होता है। इस शब्द का जिनेश्वरसूरि के पूर्व साधुजनों/आचार्यों के लिए प्रयोग प्राप्त नहीं होता है। वर्धमानसूरि चन्द्रकुलीय थे। चन्द्रकुल के साथ खरतर विरुद शब्द का लगाना उपयुक्त न समझा। नवांगीटीकाकार अभयदेवसूरि ने भगवती सूत्र की व्याख्या (रचना सं० ११२८) इनके लिए चान्द्रे कुले सद्वनकल्पकक्षे, चन्द्रकुल, समवायांग की टीका प्रशस्ति में 'नि:सम्बन्धविहारहारिचरितान्' ज्ञातासूत्र की टीका में 'निस्संबन्धविहारमप्रतिहतं शास्त्रानुसारात्तथा' और 'श्रीसंविग्नविहारिण:' शब्दों का, औपपातिक सूत्र की टीका-प्रशस्ति में 'चन्द्रकुल' और 'नि:संबन्धविहारस्य' तथा स्थानांगसूत्र की टीका के प्रारम्भ में - 'चन्द्रकुलीनप्रवचनप्रणीता- प्रति- बद्धविहारहारिचरित- श्रीवर्द्धमाना- भिधानमुनिपातिपादोपसेविन: प्रमाणादिव्युत्पादनप्रवण- प्रकरणविधप्रणायिन: प्रबुद्धप्रतिबन्धक- प्रवक्तृप्रवीणाप्रतिहत- वचनार्थप्रधानवाक्प्रसरस्य सुविहित- मुनिजनमुख्यस्य श्रीजिनेश्वराचार्यस्य' का उल्लेख किया है। चन्द्रकुल के साथ शास्त्रविहित आचार का पालन करने वाले 'सुविहित' विशेषण का प्रयोग प्राप्त होता है। आचार्य वर्धमान और जिनेश्वर ने चैत्यवास-उन्मूलन के लिए जो ज्योतिशिखा प्रज्वलित की थी, उस ज्योति-शिखा को प्रचण्ड रूप से प्रज्वलित करने वाले आचार्य जिनवल्लभसूरि, आचार्य जिनदत्तसूरि, जिनपतिसूरि, द्वितीय जिनेश्वरसूरि आदि हुए हैं। जिनवल्लभसूरि ने निषेध के साथ विधिमार्ग को प्रधानता दी इसलिए इनके समय से ये सुविहित विधिपक्षानुयायी कहलाने लगे। जन-समूह इन्हें खरतर कहता रहा किन्तु इन आचार्यों ने अपने साथ इस विरुद का प्रयोग नहीं किया। चैत्यवास-प्रथा के निरसन के साथ ही लोग जिह्वा पर चढा शब्द इनके लिए 'खरतर संघ' अथवा 'खरतर गच्छ' का प्रयोग करने लगा। इस परम्परा ने इस लोक श्रुति को १२७० के पश्चात् ही अपने लिए कोटिकगण, वज्रशाखा, चन्द्रकुल के साथ 'खरतरगच्छ' विरुद को अपना लिया जो आज तक अविच्छिन्न रूप से खरतरगच्छ के नाम से अभिहित होने लगा और हो रहा है।

नये युग का सूत्रपात

गुर्जर-धरा पर चैत्यवासियों पर विजय और चैत्यवास का जड़ से उन्मूलन होने से एवं उनके खर, तीक्ष्ण, कठोर, कठिन, सुविहित आचार का पालन करने से जिनेश्वरसूरि ने सुविहितों के जीवन में नये प्राण फूंक दिये।

यहाँ से एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। जिनेश्वरसूरि के वैदुष्य और सुविहित आचार का प्रभाव समस्त भारत के उद्भट विद्वान् जैनाचार्यों पर भी पड़ा और वे शिथिलाचार का त्याग कर सुविहित आचार की ओर कदम बढ़ाने लगे। इस विराट प्रभाव का अंकन करते हुए पुरातत्त्वाचार्य मुनि 'जिनविजयजी' कथाकोश प्रकरण की प्रस्तावना पृष्ठ ६ पर लिखते हैं-

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

'जिनेश्वरसूरि के प्रबल पाण्डित्य और प्रकृष्ट चारित्र का प्रभाव इस तरह न केवल उनके निज के शिष्यसमूह में ही प्रसारित हुआ, अपितु तत्कालीन अन्यान्य गच्छ एवं यतिसमुदाय के भी बड़े-बड़े व्यक्तित्वशाली यतिजनों पर उसने गहरा असर डाला और उसके कारण उनमें से भी कई समर्थ व्यक्तियों ने, इनके अनुकरण में, क्रियोद्धार और ज्ञानोपासना आदि की विशिष्ट प्रवृत्ति का बड़े उत्साह के साथ उत्तम अनुसरण किया। इनमें बृहद्गच्छ के नेमिचन्द्र और मुनिचन्द्रसूरि का संप्रदाय तथा मलधारगच्छीय अभयदेवसूरि का समुदाय एवं पूर्णतल्ल गच्छानुयायी प्रद्युम्नसूरि का शिष्य-परिवार विशेष उल्लेख योग्य है। मुनिचन्द्रसूरि की शिष्य-सन्तति में वादी देवसूरि, भद्रेश्वरसूरि, रत्नप्रभसूरि, सोमप्रभसूरि आदि बड़े ख्यातिमान्, महाविद्वान् और समर्थ ग्रंथकार हुए। इन्हीं की शिष्य परम्परा में आगे जाकर जगच्चन्द्रसूरि और उनके शिष्य देवेन्द्रसूरि तथा विजयचन्द्रसूरि आदि प्रख्यात आचार्य हुए, जिनसे श्वेताम्बर संप्रदाय में पिछले ५००- ६०० वर्षों में सबसे अधिक प्रतिष्ठाप्राप्त तपागच्छ नामक संप्रदाय का प्रचार और प्रभाव फैला। वर्तमान में श्वेताम्बर संप्रदाय में सबसे अधिक प्रभाव इसी गच्छ का दिखाई दे रहा है।'

मलधारगच्छीय अभयदेवसूरि के शिष्य - प्रशिष्यों में हेमचन्द्रसूरि (विशेषावश्यकभाष्यव्याख्यादि के कर्ता) लक्ष्मणगणी, श्रीचन्द्रसूरि आदि बड़े समर्थ विद्वान् हुए जिनके चारित्र और ज्ञान के प्रभाव ने तत्कालीन जैन समाज की उन्नति में विशेष प्रशंसनीय कार्य किया। पूर्णतल्ल गच्छ में देवचन्द्रसूरि और उनके जगत्प्रसिद्ध शिष्य कलिकाल-सर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि और उनके शिष्य रामचन्द्र, बालचन्द्र आदि हुए। हेमचन्द्रसूरि की सर्वतोमुखी प्रतिभा ने जैन साहित्य को कैसा गौरवान्वित किया और उनके अप्रतिम सदाचरण तथा अलौकिक तपस्तेज ने जैन समाज को कितना समुन्नत बनाया यह इतिहास प्रसिद्ध है।'

इस शास्त्रार्थ-विजय से जो साधु और श्रावक वर्ग में नव चेतना प्रादुर्भूत हुई और समाज में जो विकास हुआ उसका सारा श्रेय खरतरगच्छ को देते हुए 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास, चतुर्थ भाग' के पृष्ठ ४५५ में लिखा गया है-

'श्वेताम्बर परम्परा में आज जितने गच्छ विद्यमान हैं, उनमें सबसे प्राचीन गच्छ कौन-सा है तथा किस गच्छ ने जिनशासन के अभ्युदय-उत्थान में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, यह वस्तुतः एक गहन शोध का विषय है। इस विषय में नितान्त निष्पक्ष दृष्टि से उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री के परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर यह तथ्य प्रकाश में आता है कि वर्तमान में श्वेताम्बर परम्परा के जितने गच्छ गतिशील हैं, उनमें वर्द्धमानसूरि एवं उनके यशस्वी शिष्य जिनेश्वरसूरि के अद्भुत साहस के परिणामस्वरूप विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रकट हुआ और कालान्तर में 'खरतरगच्छ' के नाम से विख्यात हुआ 'खरा' गच्छ सर्वाधिक प्राचीन गच्छ है। सर्वाधिक प्राचीन होने के साथ-साथ 'खरा गच्छ' ने जिनशासन के अभ्युदय-उत्थान के लिये और बाह्याडम्बरों के घटाटोप से आच्छन्न जैन धर्म के वास्तविक आगमिक स्वरूप को कतिपय अंशों में पुनः प्रकाश में लाने की दिशा में भी ऐसा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, उल्लेखनीय एवं ऐतिहासिक योगदान दिया, जो जैनधर्म के इतिहास में सदा सर्वदा स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता रहेगा।'

('खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास' पुस्तक की प्रस्तावना से आंशिक संशोधन सहित साभार)

गोत्र का इतिहास
15

राखेचा/पुगलिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इस गोत्र की स्थापना भाटी क्षत्रियों से हुई है। लौद्रवपुर-जैसलमेर में तब भाटी राजा रावल जेतसी का राज्य चल रहा था। चर्चा विक्रम संवत् 1187 के काल की है। रावल जेतसी का पुत्र कुष्ठ रोग से ग्रस्त था। राजा अपने पुत्र की इस व्याधि से बहुत चिन्तित था।

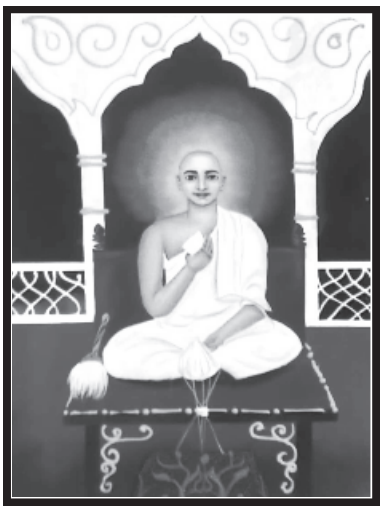

उसने कई स्थानों पर देवी-देव मनाये, परन्तु पुत्र स्वस्थ नहीं हुआ। अपनी कुल देवी का ध्यान कर सोते हुए स्वप्न में उसे संकेत मिला कि जैन आचार्य जिनदत्तसूरिजी के चरणों की सेवा करो, उनकी सेवा से ही तुम्हारा पुत्र स्वस्थ होगा।

उस समय दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी सिंध देश में बिराज रहे थे। रावल जेतसी ने खोज कर सिंध देश की यात्रा की। गुरुदेव के चरणों में लौद्रवपुर पधारने की विनंती की। उसने अपनी भाषा में निवेदन करते हुए कहा-

गुरुदेव आपके दर्श कर, मन में भया उच्छाह ।
लौद्रव श्री संघ आपके, दर्शन की राखे चाह ।।

हे गुरुदेव! लौद्रवपुर जैसलमेर का श्री संघ आपके सानिध्य का प्यासा है। आपश्री को पधारना है। मेरी समस्या का समाधान भी आपके आशीर्वाद से ही संभव होगा। गुरुदेव शासन की प्रभावना का संकेत समझकर सिंध देश से विहार कर लौद्रवपुर पधारे। श्री संघ व रावल जेतसी ने पूज्यश्री का ठाट-बाट से स्वागत किया। गुरुदेवश्री की धर्मदेशना श्रवण करने के लिये जनता उमड़ पड़ी। रावल जेतसी भी धर्म देशना श्रवण करने नित्य आने लगा।

एक दिन अपने व्याधिग्रस्त पुत्र को लेकर रावल जेतसी उपाश्रय में पहुँचा। गुरुदेव ने वासचूर्ण डाल कर कहा- परमात्मा के प्रक्षाल जल का छिड़काव करो। तीन दिन में ही गुरुदेव के वासचूर्ण व पक्षाल जल के प्रभाव से पुत्र केल्हण पूर्ण निरोगी हो गया। यह चमत्कार देख कर सभी के हृदय में गुरुदेवश्री व जिनधर्म के प्रति श्रद्धा प्रकट हुई। पुत्र केल्हण वैराग्यवासित हो उठा। उसने गुरुदेव से दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की।

गुरुदेव ने भाविभाव जान कर कहा- तुम्हें बारह व्रत स्वीकार करने हैं। विधि-विधान के साथ उसे परमात्मा व सकल श्री संघ की साक्षी से श्रावक धर्म अंगीकार कराया। 'राखे चाह' अर्थात् चाह रखता है संयम की! इस अर्थवान् गंभीर शब्द के आधार पर उसे राखेचा गोत्र प्रदान किया। तब से उनका परिवार राखेचा कहलाया। राखेचा परिवार के ही कुछ लोग पुंगल जाकर बसे। वहाँ से जब वे अन्यत्र बसने के लिये गये, तब पुंगल से आने के कारण वहाँ के लोगों ने उन्हें पुंगलिया कहा। इस प्रकार पुंगलिया गोत्र की रचना हुई। राखेचा व पुंगलिया एक ही गोत्र के हैं।

कर्नल टॉड ने राखेचा गोत्र के संबंध में लिखा है कि भाटी राजा केहर के वंश में आलून हुआ। उस आलून के चार पुत्र थे- देवसी, त्रिपाल, भवानी और राखेचा! राखेचा के वंशजों ने कृषि कार्य का त्याग कर व्यापार करना प्रारंभ किया। बाद में वे ओसवालों में सम्मिलित हो गये। इस प्रकार राखेचा के वंशज राखेचा कहलाये।

यति श्रीपालचंदजी के अनुसार पुंगल का राजा भाटी राजपूत सोनपाल था। उसके पुत्र केल्हणदे को कोढ़ रोग हुआ। विक्रम संवत् 1187 में आचार्य जिनदत्तसूरि पधारे और उनकी कृपा से केल्हणदे का कोढ़ रोग दूर हुआ। राजा सोनपाल ने जिन-धर्म स्वीकार किया। उसके वंशज राखेचा कहलाये। पूंगल से अन्यत्र बसने के कारण वे पुंगलिया कहलाये।

सत्य के प्रति अप्रतिम श्रद्धा का ऐतिहासिक कथानक

सत्यनिष्ठ राजा हरिश्चन्द्र

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

सत्यवादिता और सत्यप्रियता के संदर्भ में सबसे पहले कोई नाम जीभ पर आता है तो वह है- राजा हरिश्चन्द्र! अपनी सत्यप्रियता के कारण हजारों वर्षों के बाद भी उसका तत्त्व-दीप और सत्त्व-प्रदीप हजारों लोगों को सत्य के प्रति श्रद्धान्वित बना रहा है।

अयोध्या के अधिपति राजा हरिश्चन्द्र की ख्याति सूर्य-प्रकाश की भाँति सर्वत्र व्याप्त थी। इक्ष्वाकु कुल की ही नहीं अपितु समस्त अयोध्या की कीर्ति-सुरभि देवलोक तक फैली हुई थी।

सत्यप्रेमी राजा के आचरण से उनकी पत्नी सुतारा और पुत्र रोहिताश्व स्वयं आकर्षित थे।

राजसभा में एक बार एक सन्त ने राजा के सम्मुख फरियाद की- राजन्! एक जंगली सूअर हमारे आश्रम को बार-बार तहस-नहस कर देता है। इस आतंक से मुक्ति दिलाकर हमें आनंदित कीजिये।

राजा ने कहा- कहाँ है तुम्हारा आश्रम?

उस ऋषि ने कहा- सरयू नदी के तट पर।

न्याय प्रेमी राजा प्रजा के प्रति अत्यन्त संवेदनशील था। तुरन्त अपने अश्व पर आरुढ़ होकर वह आश्रम की ओर चला।

उसने आश्रम के चारों तरफ नजर घूमाकर देखा तो जंगली सूअर के तांड़व की भयावहता को पहचान गया।

उसे पकडने के लिए राजा तुरन्त जंगल की पगड़ंडी पर बढ़ा। योगानुयोग सुअर भागता हुआ नजर आया। वह उसके पीछे दौड़ा। झाड़ियों के पीछे छिपे सूअर की ओर तीर का प्रक्षेप किया। अगले ही पल एक करुण चीत्कार से पूरा वन थर्रा उठा।

राजा को लगा- मुझसे कोई गलती हुई है। वहाँ जाकर देखा तो पाया कि एक गर्भवती हरिणी का पेट तीक्ष्ण तीर से फटा हुआ था। रक्तधारा सतत प्रवाहित थी।

अरे! क्या सोचा था और यह क्या हो गया? दो निर्दोष प्राणियों की मृत्यु के प्रति पीड़ा का महा सागर करूण नेत्रों से छलकने लगा। हृदय की वेदना-संवेदना का कोई पार न रहा।

इस समय जैसे दिशाएँ बहरी हो गयी थी! रास्ते अंधे हो गये थे! हवाएँ रूक गयी थी! भला कौन सुने उसका हृदयद्रावक आक्रन्दन! कौन पोंछे अश्रुओं की धारा को! आज एक महापुरुष के पास न कोई दिलासा देने वाला था, न पीड़ा सुनने वाला।

इतने में राजा ने देखा कि ऋषिबाला आई और अपनी प्रिय हरिणी के वियोग में उच्चस्वर से रूदन करने लगी। दो पल में तो बेहोश होती हुई धराशायी भी हो गयी।

यह देखकर राजा दिग्भ्रमित हो गया। मन की बेचैनी बढ़ गयी। अरे! यह क्या हो गया? कहीं पशुहत्या के साथ ऋषिपुत्री की हत्या का कलंक मेरी आत्मा को कलुषित न कर दें।

कुछ पलों में ऋषिकन्या जागृत हुई और रोती हुई आश्रम की ओर चली। राजा ने सोचा कि अब कोई भी अनिष्ट घटना घट सकती है। आशंका के कोहरे से घिरा हरिश्चंद्र उसके पीछे-पीछे चला। जैसा उसने सोचा था, वैसा ही हुआ। तपस्वी ऋषि की आँखों से तप्त लाल अंगारे बरसने लगे। अंग-अंग कांपने लगा।

ए मूर्ख राजा! तूंने मेरी पुत्री की प्रिय हरिणी को मारकर अनर्थकारी कदम उठाया है। इसका भयंकर दुष्परिणाम मिलेगा। ऋषि के शाप-ताप से भयभीत राजा

उनके चरणों में गिरा और क्षमायाचना करने लगा। पर ऋषि तो क्रोध से लाल-पीले हुए जा रहे थे।

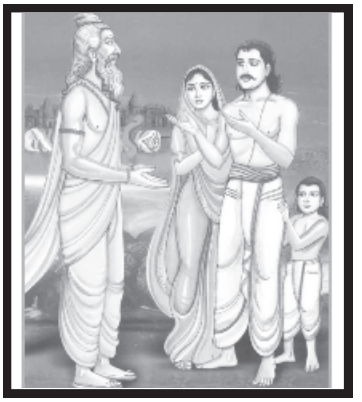

क्रोध के दावानल को शान्त करने के लिये राजा बोले-ऋषिवर! आप तो क्षमा के भण्ड़ार हैं। इस गलती के लिये क्षमा करके उपकार कीजिये। मैं अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिये अपना सारा धन-बल, राज-खजाना आपके चरणों में अर्पित करने के लिये तैयार हूँ। इसके साथ एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ भी आपको समर्पित करता हूँ।

क्रोधाग्नि को शान्त करके हरिश्चन्द्र अपने महल में पहुँचा। दो निरपराध प्राणियों की हत्या का दंश उसकी आत्मा को जख्मी कर रहा था। ऋषिवर राजपाट की लालसा लिये राजप्रासाद पहुँचे।

राजा ने राजसिंहासन पर बिठाकर उनका अभिषेक किया। रानी, मंत्री आदि को समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है? उन्होंने राजा को रोका पर राजा हरिश्चन्द्र का चित्त सत्य की शीतल चाँदनी से ओतप्रोत था।

उसने कहा-सत्य ही धर्म है। सत्य ही कर्म है। सत्य से ही देवता तुष्ट होते हैं और सत्य से ही धन, वैभव व सुख की बरसात होती है। शाश्वत सत्य के लिये यदि नश्वर धन वैभव का त्याग करना पड़े तो सोचने की भला क्या जरूरत है?

राजा हरिश्चन्द्र ने एक बार फिर से अपनी सत्यनिष्ठा का नया आलेख इतिहास की शिला पर अंकित किया।

एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान अभी बाकी था। ऋषि ने कहा-राजन्! जब समस्त राजकोष और राज्य-साम्राज्य पर मेरा अधिकार है, तब तूं न तो राजकोष से लाख स्वर्णमुद्राएँ लेकर दे सकता है, न लोगों से उधार लेकर।

राजा ने कहा-ऋषिवर्य! आप विश्वास रखिये। शीघ्र ही मैं प्रदत्त वचन के अनुसार आपको लाख स्वर्णमुद्राएँ दे दूँगा।

अब न तो धन उसका था, न सिंहासन! पल मात्र में राजा रंक बन गया पर सत्य की रक्षा का संतोष उसके मुखमण्ड़ल पर हजारों सूरज के समान चमक रहा था।

राजा ने एक सामान्य पुरुष की भाँति महल से निष्क्रमण किया। सुतारा रानी और पुत्र रोहिताश्व उसके सत्यमार्ग का अनुसरण कर रहे थे।

हजारों आँखों से बह रही अश्रु की निर्मल धारा जैसे दर्शनीय सत्यप्रिय राजा के महात्याग मार्ग का अभिषेक कर रही थी। हम धन्य हैं और धन्य रहेंगे कि देवों को भी लज्जित करें और साधुओं से भी प्रशंसित बने, ऐसे दिव्य-भव्य महापुरुष-महामानव-महासंत का सत्सानिध्य और शीतल-छत्र मिला है, अत: हमारी एक आँख में खुशी के आँसू हैं पर विरह की वेला में हमारी एक आँख में गम के आँसू हैं।

राजा मेरूपर्वत से भी अधिक अटल था सत्य के प्रति! गंगा से भी निर्मल था सत्य-अमृत में नहाकर! अयोध्या का त्याग! जंगल की राह! कंटकाकीर्ण मार्ग! कोमल पाँवों से बहती रक्तधारा का फव्वारा उनकी कष्टप्रद यात्रा को रेखांकित कर रहा था।

रहना कहाँ... खाना क्या....पीना क्या...सारी चिन्ताओं से भी अधिक चिन्ता थी-सत्य वचन के रक्षण की। हरिश्चन्द्र को सोते-जागते एक यही विचार आता था कि किसी भी तरह लाख स्वर्ण मुद्राओं का वचन निभाना है।

सत्य की परिपालना के लिये उसने पत्नी व पुत्र को एक अच्छी कीमत पर धनी ब्राह्मण को बेच दिया। इतना ही नहीं, स्वयं को भी एक चाण्ड़ाल के पास बेच दिया। ब्राह्मण और चाण्ड़ाल के पास से एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त की और ऋषि को देकर सत्य के प्रति समर्पण का अनूठा कार्य किया।

जीवन के नभ में अभी भी पाप-कर्मों के बादल छाये हुए थे। पर हरिश्चन्द्र का मनोबल अटूट और अद्‌भुत था।

ब्राह्मण सेठ सुतारा और रोहिताश्व जैसे सुन्दर व शालीन व्यवहारी दास-दासी को प्राप्त करके परम प्रसन्न था। वैसे भी उच्च कुल के लोग अपनी कुल-प्रतिष्ठा के अनुसार

सेवक पाकर ही राजी होते हैं।

यूं तो दास-दासी सेठ के लिये पुत्र-पुत्री के समान होते हैं पर कभी-कभी कर्त्तव्य के फूल में से स्वार्थ की दुर्गंध आने लगती है। ऐसा ही अप्रिय घटनाक्रम बना। दुर्भाग्य के कारण सुतारा राक्षसी के रूप में सिद्ध हुई।

दूसरी ओर पुत्र रोहिताश्व को फूल चुनने का दायित्व मिला था। एक दिन किसी विषैले सर्प ने फूल-चूनते हुए रोहिताश्व को ऐसा ड़सा कि वह उसी पल मृत्यु को प्राप्त हो गया।

दु:खी सुतारा को इस घटनाक्रम ने अन्दर से खोखला करने की भरपूर चेष्टा की पर संकल्प और सत्य के प्रति निष्ठा ने उसे थामे रखा।

पुत्र का वियोग असह्य था। उपर से पति भी पास में न थे। कौन सान्त्वना दे और कौन दु:ख बँटाये। पुत्र का अग्नि संस्कार करने वाला भी कोई नहीं था। अबला सुतारा सबला बनकर वह पुत्र का अग्नि संस्कार करने के लिये श्मशान की ओर चली।

श्मशान में पहुँचकर उसने दरवाजा खटखटाया। मध्यरात्रि में कौन है भला, यह सोचकर हरिश्चन्द्र ने दरवाजा खोला।

समय की करवट तो देखो। राजा आज शवों को जलाने वाले चाण्ड़ाल का काम कर रहा था। उसे शव जलाने के बदले आधा कफन कर के रूप में देना होता था।

मध्यरात्रि का भयावह अंधकार! कड़कती बिजली! विद्युत्प्रकाश में पति-पत्नी एक दूसरे को पहचान गये। कर्म की लीला जानकर हरिश्चन्द्र ने धैर्य धारण किया, फिर भी मन शोकातुर बने बिना न रहा।

नाथ! दुर्भाग्य से पुत्र नहीं रहा। इसका अग्नि संस्कार करना है।

सुतारा! अग्निदाह तो हो जायेगा पर आधा कफन कर के रूप देना पड़ेगा।

अब तो सुतारा का सब्र का बांध उल्लंघन करने लगा पर उसने हिम्मत न हारी। नाथ! मेरे पास तो पुत्र के लिये भी कफन नहीं है तो आधा कफन कहाँ से लाऊँ?

हरिश्चन्द्र सत्य के प्रति अटल निष्ठावान् था। उसने कहा-सुतारा! मुझे जो जवाबदारी मिली है, उसमें असत्य का जहर मिलाने की बजाय जहर पीकर मर जाना पसंद करूंगा।

सत्य मुझे सारे सम्बन्धों से अधिक प्रिय है। उसे छोड़कर मैं जी नहीं सकता। मेरी नसों में सत्य स्वयं रक्त बनकर गति कर रहा है। यदि मैंने सत्य का त्याग किया तो समझो, हरिश्चन्द्र जीवन को हार गया।

सुतारा समझ गयी कि अर्द्धवस्त्र रूप कफन का कर चुकाना जरूरी है। पुत्र-मृत्यु का कंपाने वाला दृश्य देखकर भी सत्य में पतिदेव आकाश की तरह अचल है। सुतारा ने जब अपने आंचल में से आधा वस्त्र दिया, तब हरिश्चन्द्र ने पुत्र के अग्नि संस्कार की सहमति दी।

सत्य के प्रति अप्रतिम श्रद्धा को देखकर अब तक परीक्षा कर रहा देव अन्दर तक हिल गया। अब परीक्षा करने की उसकी इच्छा न रही।

वह प्रकट होकर तुरन्त हरिश्चन्द्र के चरणों में गिरा-राजन्! आपका सत्य के प्रति स्नेह नापने में न इन्द्र समर्थ है, न बृहस्पति। सागर से भी गहरी और चन्द्र से भी शीतल है आपकी सत्य-तत्त्व की आराधना।

हरिश्चन्द्र ही नहीं, सुतारा भी आश्चर्य में थी। श्मशान का बोझिल वातावरण उपवन की खिलखिलाहट में बदल गया था। रोहिताश्व भी अंगड़ाई लेता इस तरह खड़ा हुआ, जैसे कुछ हुआ ही न था। इस दु:खद दास्तान का सुखद अन्त इस प्रकार होगा, ऐसा उन्हें अनुमान न था।

देव उनकी जिज्ञासा का समाधान करता हुआ बोला-आपके सत्य के प्रति प्रेम की सुगंध देवलोक तक व्याप्त है। अत: मैंने ही आपकी परीक्षा ली एवं मर्मान्तक पीड़ा दी।

हरिश्चन्द्र ने आत्मीयता से कहा-देववर्य! आपकी कोई भी गलती नहीं है। सब कुछ पूर्वकृत कर्मों का परिणाम है। यदि आप परीक्षा न लेते तो मेरी कसौटी कैसे होती?

फूल भी सहकर इत्र देता है, सोना भी तपकर चमकता है, वैसे ही आपने मुझे सत्य के निकष पर कसकर सच्चा, खरा और शुद्ध सोना प्रमाणित किया है।

राजा का अब अतुल पुण्य जागा। अयोध्या के राजा के रूप में हरिश्चन्द्र को पुनः पाकर प्रजा भाग्य और भगवान के गुण गाने लगी।

इतना होने पर भी देव को सन्तोष न था। उसने राजा से कोई न कोई एक प्रवर वर मांगने की विनंती की।

हरिश्चन्द्र ने कहा-सुरवर! धर्म के प्रभाव से हमारे जीवन में किंचित् भी कमी नहीं है, फिर भी यदि वर देना चाहते हो तो यह वचन दो कि अब तुम किसी की भी ऐसी जटिल परीक्षा नहीं करोगे।

देव ने स्वीकृति प्रदान की तथा राजा की निस्वार्थ उदारता की प्रशंसा करता हुआ देवलोक की ओर उड़ान भर गया।

राजा हरिश्चन्द्र पुत्र रोहिताश्व को न्याय, सत्य और कारूण्य के पाठ पढ़ाने लगा। योग्य व परिपक्व होने पर उसे राजसिंहासन पर आरूढ़ किया।

दीक्षा लेकर अब राजा-रानी, दोनों उत्कृष्ट संयम और साधना का जीवन जीने लगे! अन्त में केवलज्ञान को प्राप्त करके परम शिवत्व-निजत्व को उपलब्ध हो गये।

सत्य ने राजा को परम आत्मिक सत्य से जोड़कर सिद्ध-बुद्ध बनाया, साथ ही साथ सत्य-निष्ठा ने उन्हें ऐसी पवित्र प्रतिष्ठा प्रदान की, जिसे काल न मिटा सकता है, न घटा सकता है।

❀

मणिप्रभसूरिवर संत महान

—धनंजय जैन, नासिक

संत महान, संत महान
मणिप्रभसूरिवर संत महान ।।
संयम ले गणिवर पद पाया
लघु वय में शासन चमकाया ।।
वीर प्रभु का धर्म दीपाया
जैन धर्म की शान... संत महान... ।।
मुख पर है सूरज सी लाली
प्रवचन की है छटा निराली ।।
जिन शासन बगियां के माली
निश दिन धरते ध्यान... संत महान... ।।
करुणा का झरणा बहता है
दर्शन से संकट टलता है ।।
शरणागत को सुख मिलता है
जन जन के हो प्राण... संत महान... ।।
हर पल क्षण रहते चिंतन में
लेश प्रमाद नहीं जीवन में ।।
लक्ष सदा परहित है मन में
हो सब का कल्याण... संत महान... ।।

दीक्षा दिवस पर हमारा वंदन

—वनेचंद बोथरा बन्नू शहादा

आप की अमृतवाणी का प्याला छलकता रहे
आपकी जिनवाणी का चमन सदा महकता रहे ।।
हैं चांद सूरज जब तक इस नीले आकाश में
आपका संयम का पथ चमकता रहे ।।
चेतना की चमकती चांदनी का अभिनंदन
साधना की दमकती रोशनी का अभिनंदन ।।
संयम के शिखर पर धर्म पताका फहराने वाले
मणिप्रभसूरिजी को दीक्षा दिवस पर हमारा वंदन ।।

जागरण
का
पर्व

चातुर्मास के विशिष्ट दिवस

कैलाश बी. संकलेचा

12 जुलाई, शुक्रवार : दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज की 865वीं पुण्यतिथि, अजमेर मेला
15 जुलाई, सोमवार : चातुर्मास प्रारंभ, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
31 जुलाई, बुधवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
4 अगस्त, रविवार : मासधर
5 अगस्त, सोमवार : परमात्मा नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक महोत्सव
6 अगस्त, मंगलवार : खरतरगच्छ दिवस, पू. तपस्वी श्री छगनसागरजी म. पुण्यतिथि
14 अगस्त, बुधवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
18 अगस्त, रविवार : अक्षयनिधि तप प्रारंभ
26 अगस्त, सोमवार : श्री पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व प्रारंभ
27 अगस्त, मंगलवार : प्रवचन के दौरान कल्पसूत्र की बोलियां
28 अगस्त, बुधवार : कल्पसूत्र वाचन प्रारंभ,
29 अगस्त, गुरुवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण, मणिधारी दादाश्री जिनचंद्रसूरिजी की 853वीं स्वर्गारोहण जयंती,
30 अगस्त, शुक्रवार : भगवान महावीर जन्म वांचन एवं सपनाजी की बोलियाँ, महान साधक श्रीमद् श्रीमद् देवचंद्रजी म. की पुण्यतिथि
2 सितम्बर, सोमवार : सांवत्सरिक महापर्व - मूल बारसा सूत्र वाचन, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण
13 सितम्बर, शुक्रवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
16 सितम्बर, सोमवार : अकबर प्रतिबोधक दादागुरु श्री जिनचंद्रसूरिजी म. की 406वीं पुण्यतिथि
27 सितम्बर, शुक्रवार : श्री महावीर गर्भापहार कल्याणक
28 सितम्बर, शनिवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
5 अक्टूबर, शनिवार : नवपद ओली प्रारंभ
12 अक्टूबर, शनिवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
13 अक्टूबर, रविवार : नवपद ओली समाप्ति
25 अक्टूबर, शुक्रवार : आचार्य श्री जिनवल्लभसूरिजी म. पुण्यतिथि
26 अक्टूबर, शनिवार : धनतेरस
28 अक्टूबर, सोमवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, दीपावली पर्व, नववर्ष प्रारंभ, निर्वाण लड्डू चढ़ाना, गौतम रास श्रवण
1 नवम्बर, शुक्रवार : ज्ञान पंचमी महापर्व
4 नवम्बर, सोमवार : चौमासी अठाई प्रारंभ
11 नवम्बर, सोमवार : चातुर्मासिक प्रतिक्रमण, चातुर्मास पूर्ण,
12 नवम्बर, मंगलवार : कार्तिक पूर्णिमा, सिद्धाचल महातीर्थ की भाव यात्रा

धारावाहिक
कथा
8

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

राजनर्तकी के कक्ष में सोये जब राजकुमार पुष्पचुल की आँखें खुली तो उसने गवाक्ष से आकाश की ओर झांका। चन्द्रमा की स्थिति को देखकर उसे लगा- रात्रि का अंतिम प्रहर प्रारंभ हो गया है। उसने सोचा- क्या बात है! मेरा सिर आज इतना भारी क्यों हो रहा है? सोचते-सोचते उसे याद आया- हाँ, उसने अपनी कुल-परम्परा के विपरीत रात में राजनर्तकी की बातों में पागल होकर शराब का सेवन किया था।

वह सोचने लगा- कितनी गिरावट आयी है उसके जीवन में? क्या इसी गिरावट के लिए उसके माता-पिता ने उसे जन्म दिया था?उसने अपनी धायमाता से कितनी बार सुना है कि बहुत बड़ी तपस्या करके उसे देवी से वरदान के रूप में पाया गया है।

ओह तो...। यह मैंने क्या किया? मैं पतन की राह पर उतना आगे कैसे बढ गया! राज-बीज होकर भी चौय-कर्म में लिप्त होते हुए धीरे-धीरे मैं लोकनिंद्य प्रवृत्ति में लीन हो गया!

वह सोचने लगा- उसके माता-पिता कितने सज्जन है। अपनी सज्जनता से प्रेरित होकर ही तो उन्होंने अपने पुत्र को सही राह पर लाने के लिए एक शालीन राजकन्या के साथ विवाह बंधन में बांध दिया था। उन्हें कहाँ पता था कि उनका नालायक बेटा तो उनके सारे सपने तोड़ने के लिए ही इस धरती पर आया है।

ओह! मैंने अपने माँ-पिताजी के प्रति तो भयानक अपराध किया ही हैं पर मेरे विश्वास से बंधकर आयी उस स्वप्न-सुंदरी के साथ क्रूरतम अपराध किया है जिसे शादी की रात ही धोखा देकर इस राजनर्तकी की आगोश में सुख की लालसा में आया था।

उसने गर्दन घुमाकर शय्या पर गहरी नींद में सोयी अपनी प्रेयसी को देखा। अंधेरे में यह कितनी लुभावनी और मनभावन लग रही थी पर ब्रह्मवेला में इसके चेहरे पर मन की कुटिलता स्पष्ट चुगली खा रही है। इसकी चिकनी चुपडी बातों में आकर मैंने राजमर्यादा तो तोडी ही पर एक सामान्य पति की भी मर्यादा भी तोड दी।

वह अपनी शय्या से उठा। अपना परिधान व्यवस्थित कर वह कक्ष से बाहर आ गया। बाहर द्वारपाल उनिंदी आंखों से पहरा दे रहा था। युवराज की आहट पर वह सहसा खड़ा हो गया।

द्वारपाल के नमस्कार का संकेतात्मक उत्तर देते हुए उसने कहा- जब मालकिन जागे तो मेरे राजमहल में जाने की सूचना दे देना। उत्तर का इंतजार किये बिना ही युवराज लम्बे-लम्बे डग भरते हुए सीढ़ियां उतरकर गुप्त-मार्ग से ही अपने महल में पहुंच गया।

जब अपने कक्ष में पहुंचकर युवराज ने अस्त-व्यस्त वेशभूषा में सोयी राजमहिषी को देखा तो अपराध-बोध और गहरा हो गया। उसने देखा- युवरानी का सारा शृंगार बिखर गया है। चाव से बांधी वेणी बिखर गयी है। चेहरे पर आँसुओं की लकीरें सूखकर राजकुमार

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास सूची - 2019

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता-पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

1. पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ठाणा 8

श्री अग्रवाल विश्राम भवन
नदी किनारे
पो. धुलिया-424002 (महाराष्ट्र)
मुकेश- 79871 51421,व्हाट्सप- 9825105823
Email: jahajmandir99@gmail.com

2. पू. आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म. ठाणा 2

श्री अजितनाथ जैन मंदिर, कोठी,
सुलतान बाजार,
पो. हैदराबाद-500095 (आंध्रप्रदेश)

3. पू. आचार्य श्री जिनपीयुषसागरसूरिजी म. ठाणा 6

जैन दादावाडी माणिकतल्ला
29 बद्रीदास टेम्पल रोड
पो. कोलकाता-700004 (पं. बंगाल)

4. पू. उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 2

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
पो. बरमसर-345001
जिला-जैसलमेर (राजस्थान)

5. पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.
पू. मुनि श्री मनिषप्रभसागरजी म.
पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. ठाणा 3

कुशल भवन, शांतिनगर,
पो. सांचोर-343041 जिला-जालोर (राजस्थान)
फोन 02879-283154

6. पू. मुनि श्री ललितप्रभसागरजी म. ठाणा 3

संबोधि धाम,
कायलाना रोड
पो. जोधपुर-342004 (राजस्थान)

7. पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.
पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ठाणा 2

जैन भवन,
खादी भण्डार के सामने,
पो. जैसलमेर-345001 (राजस्थान)

8. पू. गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. ठाणा 2

श्री जैन श्वे. तीर्थ तिमनगढ
मु. तलहटी, पो. कंचनपुर, तह. मासलपुर
जिला- करौली (राजस्थान) पिन- 322242

9. पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. ठाणा 9

श्री जिन कुशलसूरि जैन दादावाड़ी,एम.जी. रोड़,
पो. रायपुर-492001 (छत्तीसगढ़)
फोन. 0771-2226085

10. पू. मुनि श्री विवेकसागरजी म. ठाणा 3

श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मंदिर
सराफा लाइन, गांधी चौक
पो. चन्द्रपुर-442402 (महाराष्ट्र)

11. पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. ठाणा 3

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला,
तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (गुजरात)

12. पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. ठाणा 1

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला,
तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (गुजरात)

13. पू. महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म. ठाणा 3

श्री दादावाड़ी संस्थान ट्रस्ट,
28 गणेश कॉलोनी, रामबाग,
पो. इन्दौर-452002 (मध्यप्रदेश) फोन-0731-2423183

14. पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 7

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला,
तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270,(गुजरात)फोन.02848-252653

15. पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 6

महावीर भवन, सेठिया डागा पारख मोहल्ला,
पो. बीकानेर-334001 (राजस्थान)

16. पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा 17

कच्छी भवन, गिरनार तीर्थ
पो. जुनागढ़-362001 (गुजरात)

17. पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 5

शीतलनाथ जैन मंदिर के पीछे जैन उपाश्रय
चूड़ीघरों का वास, गांधी चौक,
पो. फलोदी-342301 जिला-जोधपुर (राजस्थान)

18. पू. साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 10

अरिहंत वाटिका, गलता गेट, मोहनवाड़ी
ट्रांसपोर्ट नगर के पास, दिल्ली जयपुर हाइवे,
पो. जयपुर-302003 (राजस्थान)

19. पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. ठाणा 7

श्री जैन श्वे. जिनदत्तसूरि दादावाड़ी,
पाल बिचला, विनयनगर
पो. अजमेर-305001 (राजस्थान)

20. पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री अजितनाथ जैन मंदिर,
कोठी, सुलतान बाजार,
पो. हैदराबाद-500095 (आंध्रप्रदेश)

21. पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. ठाणा 5

कनक आराधना भवन, काली पोल का उपासरा
पो. नागोर-341001 (राजस्थान)

22. पू. साध्वी श्री पुष्पाश्रीजी म. ठाणा 1

श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर, उपाश्रय,
पोस्ट-बागबाहरा-493449
जिला-महासमुन्द
(छत्तीसगढ़)

23. पू. साध्वी श्री राजेश श्रीजी म. ठाणा 6

जैन मंदिर,
सराफा लाइन
पो. कवर्धा-491995 (छत्तीसगढ़)

24. पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री सीमंधरस्वामी जैन मंदिर दादावाडी, उपाश्रय
पो. बेरला-491332
जिला-बेमेतरा (छत्तीसगढ़)

25. पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा 2

जैन मंदिर दादावाडी,
पो. महरौली-110030 (दिल्ली)

26. पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. ठाणा 6

बाबू माधवलाल धर्मशाला,
तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (भावनगर-गुजरात)

27. पू. साध्वी श्री भाग्ययशाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री वासुपूज्यस्वामी मीरा आनंद संघ
507 ए, तपकीर गली, बुधवार पेठ
पो. पूणे-411042 (महाराष्ट्र)

28. पू. साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म.

पू. साध्वी शुभंकराश्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे. पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट, जैन मंदिर वार्ड
पो. हिंगनघाट-442301 (महाराष्ट्र)

29. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 1

जैन श्वे. मंदिर, पद्मावती नगर
अभिनंदन कॉलोनी के पास
पो. मंदसौर-458001 (मध्यप्रदेश)

30. पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म. ठाणा 9

जैन श्वेताम्बर मंदिर,
विवेकानंद नगर
पो. रायपुर- 492001 (छत्तीसगढ़)

31. पू. माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.

पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 5
श्री मणिधारी भवन, दादावाडी, श्रीपादनगर,
पो. इचलकरंजी-416115 जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

32. पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म. ठाणा 3

श्री ओसवाल जैन श्वे. संघ,
गोल गंज
पो. छिंदवाडा-480001 (मध्यप्रदेश)

33. पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. ठाणा 3

श्री चन्द्रप्रभ जैन श्वे. मंदिर,
सेठ कालुराम रतनलाल
मालू जैन भवन, 38 वेंकटाचलम स्ट्रीट, चूलै,
चेन्नई-600112 (तमिलनाडु)

34. पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 7

श्री आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर
सदर बाजार
पो. दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

35. पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. ठाणा 7

श्री पार्श्वनाथ जैन बगीचा,
सदर बाजार,
पो. राजनांदगांव-491441 (छत्तीसगढ़)

36. पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 3

जैन मंदिर दादावाडी,
पो. महरौली-110030
(दिल्ली)

37. पू. साध्वी श्री संयमपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 2

सुगनजी का उपासरा,
रांगडी चौक,
पो. बीकानेर-334001 (राजस्थान)

38. पू. साध्वी श्री हर्षयशाश्रीजी म. ठाणा 3

जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जैन दादावाड़ी,
10वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा
पो. जोधपुर-342003 (राजस्थान)

39. पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म. ठाणा 6

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ उपाश्रय
ए/1, ऋषिका एपार्टमेंट, शाहीबाग,
पो. अहमदाबाद-380004 (गुजरात)

40. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 5

श्री शीतलनाथ जैन मंदिर संस्थान
लेन नं. 1, तेली गली नं. 2,
पो. धुलिया-424002 (महाराष्ट्र)

41. पू. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 2

श्री कैवल्यधाम तीर्थ
पो. कुम्हारी-490042 जिला-दुर्ग
(छत्तीसगढ़)

42. पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. ठाणा 7

श्री हीराजी गुलेच्छा जैन आराधना भवन
पो. मोकलसर-344044
जिला-बाडमेर (राजस्थान)

43. पू. साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर
टोंक फाटक, बरकत नगर,
पो. जयपुर-302015 (राजस्थान)

44. पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी ठाणा 5

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
वार्ड नं. 22, पंजाब नेशनल बैंक के सामने
पो. दल्लीराजहरा-491228 जिला-बालोद (छत्तीसगढ़)

45. पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. ठाणा 2

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी, बिल्डींग 25 ए,
पहला माला, अशोकनगर
पो. भिवण्डी-421302 जिला-ठाणे (महाराष्ट्र)

46. पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. ठाणा 3

श्री नाकोडा भवन के पास,
शत्रुंजय दर्शन रेजिडेन्सी 104-ए विंग
पो. पालीताना-364270 (गुजरात)

47. पू. साध्वी श्री प्रभंजनाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ,
इतवारी बाजार,
पो. धमतरी- 493773 (छत्तीसगढ़)

48. पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 6
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर, 85 अम्मन कोइल स्ट्रीट,
पो. चेन्नई 600079 (तमिलनाडु)

49. पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. ठाणा 3

श्री शांतिनाथ मंदिर उपाश्रय,
लोढों का वास,
पो. पाली- 306401 (राजस्थान)

50. पू. साध्वी श्री मृदुलाश्रीजी म. ठाणा 3

श्री जिनकुशलसूरि जैन छोटी दादावाडी,
आर ब्लॉक, साऊथ एक्स. भाग-2,
अंसल प्लाजा के सामने,
पो. नई दिल्ली-110049 (दिल्ली)

51. पू. साध्वी श्री गुणरंजना श्रीजी म. ठाणा 1

श्री शंखेश्वर पार्श्व पद्मावती धाम
शक्ति नगर, तलेरिया रोड
पो. नीमच-458441 (मध्यप्रदेश)

52. पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 3

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी
पो. बरमसर-345001 जिला-जैसलमेर
(राजस्थान)

53. पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 5

श्री महावीर स्वामी जैन श्वे. संघ,
15-1-494, जैन मंदिर मार्ग, फीलखाना,
पो. हैदराबाद-500012 (आंध्रप्रदेश)

54. पू. साध्वी श्री शीलगुणाश्रीजी म. ठाणा 3

श्री विमलनाथ जैन मंदिर
पो. बडवाह-451115
(मध्यप्रदेश)

55. पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. ठाणा 6

श्री जैन श्वे. गोडी पार्श्वनाथ मंदिर,
एन. सी. रोड
पो. तेजपुर-784001 (आसाम)

56. पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी परिसर,
गायत्री मंदिर के पास,
पो. धोरीमन्ना-344704 जिला-बाडमेर
(राजस्थान)

57. पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. ठाणा 4

श्री अजितनाथ जैन श्वे. मंदिर,
भगवान महावीर वार्ड, भाजी मंडी, इतवारी,
पो. नागपुर-440002 (महाराष्ट्र)

58. पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ठाणा 2

जैन श्वे. मू.पू. संघ, प्लॉट नं 362,
वार्ड नं 1213,
पो. गांधीधाम-370201 (कच्छ-गुजरात)

59. पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा 3

श्री जैन श्वे. दादावाडी,
मोतीडुंगरी रोड,
पो. जयपुर-302004 (राजस्थान)

60. पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 3

झाबक भवन, नवपद सोसायटी के पास,
आजवा रोड़,
पो. बड़ोदा-396006 (गुजरात)

61. पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जिनकुशल सूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट
89/90, गोविन्दप्पा रोड़, बसवनगुडी
पो. बेंगलुरु-560004 (कर्णाटक)

62. पू. साध्वी श्री संयमज्योति श्रीजी म. ठाणा 3
श्री वासुपूज्य आराधना भवन, ए-715, शिव मार्ग
मालवीय नगर, रूंगटा हॉस्पीटल के सामने वाली गली
पो. जयपुर-302017 (राजस्थान)

63. पू. साध्वी श्री संयमप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री कुंथुनाथ जैन श्वे. मंदिर उपाश्रय
पो. उदयरामसर-334402 जि.-बीकानेर
(राजस्थान)

64. पू. साध्वी श्री अतुलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री बलवाडा पार्श्वनाथ जयानंद भवन,
धान मंडी
पो. भानपुरा-458775 जि-मंदसौर
(मध्यप्रदेश)

65. पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म. ठाणा 1
श्री जैन श्वे. उपाश्रय
पो. कालापीपल मण्डी-465337
जिला-शाजापुर (मध्यप्रदेश)

66. पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री वासुपूज्य महाराज का मंदिर उपाश्रय
जिनदत्तसूरि दादावाडी, सुरज पोल के बाहर,
मेवाड़ मोटर्स लिंक रोड़
पो. उदयपुर-313001 (राजस्थान)

67. पू. साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ
ज्ञान कल्याण आराधना भवन,
पिपलिया बाजार
पो. ब्यावर-305901 (राजस्थान)

68. पू. साध्वी श्री मुक्तांजनाश्रीजी म. 4
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर
19 महावीर बाग, एरोड्रम रोड,
पो. इन्दौर-452002 (मध्यप्रदेश)

69. पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 5
कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ,
कुशल वाटिका, पाल रोड़,
पो. सूरत-395009 (गुजरात)

70. पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. मंदिर उपाश्रय
पो. चौहटन-344702
जि. बाड़मेर (राजस्थान)

71. पू. साध्वी श्री भाग्योदयाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. मंदिर, गांधी चौक
पो. नवापारा राजिम-493885 जिला-रायपुर
(छत्तीसगढ़)

72. पू. श्री साध्वी श्री अक्षयनिधिश्रीजी म. ठाणा 2
पार्श्व कुशल धाम, दानवाडी, दादावाडी
पो. कोटा-324009
(राजस्थान)

73. पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ सांचोर
विल्सन स्ट्रीट, वी.पी. रोड पुलिस चौकी के सामने
पो. मुंबई-400004
(महाराष्ट्र)

74. पू. साध्वी श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म. ठाणा 4
श्री धर्मनाथ जैन श्वे. मंदिर
गोशाला रोड, जुगसलाई
पो. जमशेदपुर-458775
(झारखण्ड़)

75. पू. साध्वी श्री समदर्शिताश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड,
पो. पालीताणा-364270 जि. भावनगर
(गुजरात)

76. पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ शीतलवाडी उपाश्रय,
गोपीपुरा, सुभाष चौक, ओसवाल मोहल्ला,
पो. सूरत-391440
(गुजरात)

77. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री शीतलनाथ जैन मंदिर संस्थान
लेन नं. 1, तेली गली नं. 2,
पो. धुलिया-424002
(महाराष्ट्र)

78. पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर,
नयापुरा
पो. मन्दसौर-458001
(मध्यप्रदेश)

पू. मोहनलालजी म. का समुदाय

आज्ञा - पू. गणाधीश पं. श्री विनयकुशलमुनिजी म.

1. पू. गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनिजी म. ठाणा 4
श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन,
हमीरपुरा
पो. बाडमेर- 344001
(राजस्थान)

2. पू. विनयमुनिजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. मंदिर, ओसवाल भवन,
सदर बाजार
पो. श्योपुर-476337
(मध्यप्रदेश)

3. पू. साध्वी श्री कुशल श्रीजी म. ठाणा 1
श्री केसरियानाथ धर्मशाला,
मोती चौक
पो. जोधपुर-342001
(राजस्थान)

4. पू. साध्वी श्री विरतियशाश्रीजी म. ठाणा 2
श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन,
हमीरपुरा
पो. बाडमेर-344001
(राजस्थान)

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रति वर्ष दीपावली के अवसर पर पंचांग का प्रकाशन भी किया जाता है।

मुनि भगवंत कुल	51	
साध्वी भगवंत कुल	273	कुल योग - 324
मुनि भगवंत के चातुर्मास	14	
साध्वी भगवंत के चातुर्मास	68	
कुल चातुर्मास	82	

से अपना मूक-दर्द प्रकट कर रही थी। युवरानी के पलंग पर सिर टिकाये एक दासी बैठी ही सो गयी थी।

युवराज के पांवों की हल्की सी आहट सुनते ही दासी की नींद तुरंत ही खुल गयी। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। नींद से बोझिल पलकें उघाडकर जब सामने खड़े युवराज को देखा तो वह चौंकी। झुककर प्रणाम किया और आज्ञा लेकर बाहर आ गयी।

युवराज खड़े-खड़े युवरानी के निर्दोष सौन्दर्य को पीते रहे। वह सोचने लगे- कैसा बेवकूफ हूँ मैं, ऐसी शील और सदाचार संपन्न नव विवाहित अप्सरा को छोड़कर बाजार का झूठन खाने का लालच कर रहा हूँ। कहाँ यह अपने प्रियतम के प्रति रोम-रोम से समर्पित देव मोहिनी और कहाँ मात्र पैसे के मोह में अपनी भावभंगिमा से रूपजाल में फंसाने वाली वह नर्तकी।

युवराज मुग्धभावों से लंबे समय तक युवरानी को अपलक नयनों से निहारते रहे। धीरे से उन्होंने उसके बिखरे केशों को जब अपने हाथों में लिया तो युवरानी ने चौंककर अपने नयन खोले।

सामने जब अपने इंतजार के देवता को देखा तो उनके गुलाबी पंखुडीनुमा होठ अनायास ही मुस्करा उठे। आँखों में लाज की बोझिलता झलक उठी। निद्रा जगत से जब वह वर्तमान में लौटी तो बीती रात की सारी स्मृतियां चलचित्र की भांति उसके विचार जगत में तैर गयी।

आज स्वामी से मेरी पहली मुलाकात है। स्वामी समय पर कक्ष में नहीं पहुंचे उसके लिए वह उनसे लड़े अथवा अपने प्रेम समर्पण से स्वामी को स्वत: अपनी भूल का अहसास करने का अवसर दे।

नहीं...! वह किसी अशिष्ट और अनपढ़ औरत की तरह लड़ने की अपेक्षा अपने प्रेम, सेवा और निष्ठा से उनका मन जीतेगी। जल्दी ही वह अपनी मानसिक उलझन से बाहर आ गयी। उसने अत्यन्त भक्ति एवं विनय से झुककर युवराज के चरण स्पर्श किये।

युवरानी के इस विनम्र व्यवहार से युवराज हतप्रभ हो गया। यह तन की ही नहीं मन की उससे भी ज्यादा सुंदर है।

यहाँ आते वक्त कहाँ तो वह युवरानी के आक्रोश की कल्पना से आशंकित था और कहाँ यह सहिष्णुता की जीवंत प्रतिमा जिसकी नस-नस में विनय और शिष्टता है।

उसने अपने दोनों हाथों से युवरानी को धीरे से उठाया और कहा-देवी! मैं तुम्हारे सपनों का हत्यारा हूँ। मेरे पांव छूने की अपेक्षा मुझे दंडित करो ताकि मेरा मन हल्का हो। जब तुमने ससुराल की दहलीज पर कदम रखा तो कितनी कल्पनाएँ तुम्हारे मन में अंगड़ाइयां ले रही थी, पर जब तुमने मेरे व्यवहार की रुक्षता देखी तो तुम्हें कितनी निराशा, पीड़ा और नाराजगी पैदा हुई होगी! तम मुझे मेरे व्यवहार की सजा दो देवी।

ऐसा मत कहो स्वामी! पत्नी का स्थान सदैव अपने स्वामी के चरणों में होता है। आपको दण्ड देने की बात मैं सोच भी नहीं सकती। आपकी सेवा और भक्ति मेरा धर्म है। चाहे आप मेरे साथ कैसा भी व्यवहार करें।

-निसंदेह यह तुम्हारे महान् संस्कार ही है कि तुमने कष्ट में भी इतनी धीरज और शांति रखी। तुम्हारा यह उदार व्यवहार जरुर मेरी उन्नति में सहयोगी बनेगा।

(क्रमश:...)

केंद्रीय मंत्री अरविन्द सावंत ने लिया पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद

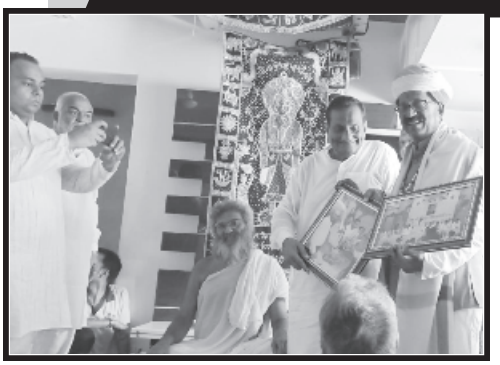

मुंबई 8 जून। देश के केंद्रीय उद्योग मंत्री श्री अरविन्दजी सावंत ने दि. 8 जून को पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. से मुलाकात कर गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रात: खरतरगच्छ भवन मुंबई से विहार कर गुरुदेव दर्शन हाइट्स स्थित श्री जीवराजजी ऊकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल के निवास पर प्रवास करते हुए तारदेव स्थित श्री प्रकाशजी कानूंगो के निवास पधारे। जहां केंद्रीय मंत्री का गुरुदेव के दर्शनार्थ आगमन हुआ।

केंद्रीय मंत्री श्री अरविन्दजी सावंत ने इस अवसर पर कहा कि गुरुदेव तो गुणों की खान है। इनसे हम जितना प्राप्त करें कम है। गुरु कभी जाति धर्म के बंधनों में नहीं बंधते। गुरु सदैव गुरु ही होते है। मंत्रीजी ने आगे बताया कि मंत्री बनने के पश्चात सबसे पहला आशीर्वाद गच्छाधिपतिजी से प्राप्त हुआ है। श्री प्रकाशजी कानूंगो परिवार द्वारा अरविन्द सावंतजी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर समस्त बोथरा परिवार सहित सर्वश्री सोहनराजजी पारख, के. सी. जैन, नरसिंगमलजी बोहरा, पुखराजजी भंसाली, चम्पालालजी वर्धन, राकेशजी मेहता, मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, बाबुलालजी मरडिया, लालचंदजी बोथरा, अरविन्द दूधवड़कर, प्रदीप गोकलानी, जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, हस्तीमलजी जैन, मिलापजी बोथरा, सोहनराजजी सेठिया, धनपतजी कानुगो, राजूजी मेहता, राजूजी अंगारा, कन्हैयालालजी खण्डेलवाल, कांतिलालजी बोकड़िया, चम्पालालजी श्रीश्रीमाल, बाबूलालजी श्रीश्रीमाल आदि कई गणमान्य महानुभावों ने पधारकर आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

–धनपत कानुगो

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित

नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय एवं मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिए

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से दिनांक 15 नवम्बर 2017 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई है। ऐसे भव्य जिनालय एवं दादाबाड़ी के दर्शनार्थ सपरिवार पधारकर यात्रा का लाभ लेवें।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित दादाबाड़ी में साधु-साध्वीयों के लिये आराधना हॉल बनाया गया है एवं आधुनिक धर्मशाला में 4 कमरें वातानुकूलित बनाये गये हैं तथा डोरमेट्रीमय 20 पलंग की सुविधा उपलब्ध है। सर्व सुविधायुक्त भोजनशाला चालू है।

यहां पधारने के लिये बीकानेर तथा फलोदी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर-फलोदी-बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Executive Trustee
Shri padamji Tatia
Mob. 9840842148

मुनीमजी : प्रशान्त शर्मा
श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305, (जि.बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635 पेढ़ी, 9001426345 मुनीमजी

अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का संयमोत्सव मनाया गया

आडगांव-नाशिक 23 जून। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के संयम-ग्रहण के 46 वर्ष पूर्ण होने व 47वें वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में ता. 23 जून 2019 रविवार को अभिनंदना समारोह मनाया गया।

यह समारोह नाशिक-आड़गांव स्थित श्री कान्तिमणि विहार में मनाया गया।

समारोह का आयोजन श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् मुंबई के तत्त्वावधान में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा किया गया।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री ने कहा- मेरी प्रगति में मेरा अपना पुरुषार्थ कम, साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं का प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, सहयोग अधिक है। यह आप सभी के प्रेम व श्रद्धा का ही परिणाम है कि जिनशासन के कार्यों में निमित्त बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

उन्होंने कहा- मैं आज अपनी पूज्य माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. को प्रणाम करता हूँ, जिनकी कृपा से मुझे व बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभा को चारित्र मिला। हम दोनों भाई-बहिन चारित्र की परिभाषा नहीं समझते थे। मां की इच्छा ही हमारे चारित्र का आधार बनी। उन्होंने ही गुरुदेव से मिलाया। पूज्य गुरुदेव श्री का मुझे वात्सल्य मिला, कृपा मिली। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्हीं की कृपा का परिणाम है।

उन्होंने कहा- आज का दिन मेरे लिये चिन्तन का दिन है। 46 वर्ष जितना लम्बा समय कब बीत गया, पता भी नहीं चला। मुझे बीते 46 वर्षों की समीक्षा करनी है ताकि आने वाले समय को सार्थक कर सकूं। आज हम तीनों का दीक्षा दिवस है। मैं पू. माताजी म. व बहिन विद्युत्प्रभा को दीक्षा दिवस की वर्धापना देता हूँ।

इस अवसर पर पूज्य मुनिश्री मयूखप्रभसागरजी म. ने फरमाया- यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे पूज्य गुरुदेवश्री का शिष्यत्व प्राप्त हुआ। उनके गुणों का मैं क्या वर्णन करूं।

उन्होंने संख्यात्मक उदाहरणों से पूज्यश्री का महिमा गान करते हुए कई घटनाऐं सुनाई।

इस अवसर पर धनंजय जैन ने स्वरचित गीतिका प्रस्तुत की। सौ. मीना राजेन्द्रजी सुराणा, खरतरगच्छ महिला परिषद्-मुंबई ने भी अपने भाव प्रस्तुत किये। खरतरगच्छ बालिका परिषद् मुंबई ने भाव वाही नृत्य प्रस्तुत किया।

ट्रस्ट के अध्यक्ष शेखरजी सराफ ने सभी का स्वागत किया। पं. विक्की भाई ने संयम संवेदना प्रस्तुत की। बाड़मेर-मालेगांव निवासी श्री सुरेशकुमारजी मेवारामजी मेहता ने गुरुपूजन का लाभ लिया तथा भाडखा-भिवंडी निवासी शा. वीरचंदजी शंकरलालजी लालन परिवार ने कामली बहोराने का लाभ लिया।

समारोह में नाशिक, मुंबई, कल्याण, भिवंडी, नंदुरबार, अक्कलकुआं, सेलंबा, खापर, वाण्याविहिर, तलोदा, खेतिया, दौंडाइचा, धुलिया, सूरत, मालेगांव, इचलकरंजी आदि कई क्षेत्रों से बडी संख्या में गुरुभक्त उपस्थित थे।

'संयम संवेदना' के सुंदर भाववाही कार्यक्रम का आयोजन अद्‌भुत था। धर्मसभा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के समस्त भारतवर्ष से उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा एवं जनमानस द्वारा गुरुदेव को अक्षत से बधाकर संयम-जीवन की शुभकामनाएं दी गई।

अंत में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

भिवण्डी दादाबाड़ी में शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा संपन्न

भिवण्डी 12 जून। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. की निश्रा में श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ भिवण्डी के तत्त्वावधान में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा की प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुदी दशमी विक्रम संवत् 2076 दिनांक 12 जून 2019 को मंगल मुहूर्त में अत्यंत आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

दादाबाड़ी का निर्माण पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री की प्रेरणा से सन् 2012 में हुआ था तथा उनकी ही निश्रा में प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। इसी दादावाडी में एक देवकुलिका बनाकर शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु को प्रतिष्ठित किया गया।

दिनांक 30 मई को पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री की निश्रा में जाजम के आशातीत चढ़ावे हुए। दिनांक 11 जून को परमात्मा का प्रवेश, पूज्यश्री का प्रवेश व वरघोड़े का आयोजन किया गया।

दिनांक 12 जून को कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, नवग्रह पूजन, दश दीक्पाल पूजन, अष्ट मंगल पूजन, अट्ठारह अभिषेक आदि का मंगल विधान किया गया।

शुभ मुहूर्त में परमात्मा की प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण व स्वर्ण कलश की प्रतिष्ठा की गई।

कायमी ध्वजा का लाभ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दशम ग्रुप हस्ते पारसमलजी बोहरा ने लिया। स्वर्ण कलश का लाभ छगनलालजी नखतमलजी संकलेचा व भरतकुमारजी चिंतामणदासजी मालू परिवार ने तथा विराजमान का लाभ श्री गेनीरामजी कन्हैयालालजी धारीवाल परिवार ने लिया।

इस अवसर पर प्रतिष्ठा के पश्चात मंगल देशना फरमाते हुए पूज्यश्री ने परमात्मा भक्ति की तथा जैनत्व को अपने जीवन में उतारने के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा दी। पूज्यश्री के गुरुपूजन का लाभ अनिलकुमारजी रिखबदासजी छाजेड़ परिवार ने तथा कामली ओढाने का लाभ श्री वीरचंदजी शंकरलालजी लालण परिवार ने लिया।

द्वारोद्घाटन का लाभ श्री रमेशकुमार बंशीधरजी संकलेचा परिवार ने लिया। परमात्मा की देवकुलिका का लाभ श्री रतनलालजी नेमीचंदजी पारख परिवार ने तथा दादा गुरुदेव की देवकुलिका का लाभ श्री पवनकुमारजी टीलचंदजी बोथरा परिवार ने लिया। विधि-विधान संजय जैन ने कराया। संगीतकार अनिल सालेचा एंड पार्टी ने भक्ति भाव की रमझट मचाई।

अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का कल्याण में पदार्पण

कल्याण 13 जून। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. का राजस्थान जैन श्री संघ कल्याण द्वारा हार्दिक स्वागत एवं सामैया किया गया।

पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का राजस्थान भवन में प्रवचन हुआ। पूज्य श्री ने जीवन जीने की कला पर प्रभावशाली प्रवचन दिया। पूज्य मुनिश्री मयूखप्रभसागरजी म. ने भी प्रवचन दिया।

दोपहर में पूज्यश्री का केवलचंदजी छोगालालजी शंकलेचा के निवास पर सकल श्रीसंघ के साथ पधारे।

ज्ञातव्य है कि पूजनीय साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री केवलचंदजी शंकलेचा परिवार ने जालौर-जोधपुर मुख्य मार्ग पर स्थित नोरवा में स्वद्रव्य से जिनकुशल हेम विहारधाम का निर्माण किया है। यहां जिनमंदिर, दादाबाड़ी, धर्मशाला, भोजनशाला आदि बने हैं। इस मंदिर दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के कर कमलों द्वारा ही संपन्न हुई थी।

पूज्य श्रीने परिवार के भावों की अनुमोदना करते हुए केवलचंदजी का स्मरण करते हुए परिवार की एकता इसी प्रकार बने रहने की प्रेरणा दी। केवलचंदजी के बाद उनके सुपुत्र श्री नरेश, कमलेश व विमल पिताजी के पद-चिन्हों पर चलते हुए शासन-सेवा कर रहे हैं। श्री नरेशजी शंकलेचा जहाज मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी है।

शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की कन्याकुमारी में प्रतिष्ठा महोत्सव

कन्याकुमारी 4 जुलाई। ऐतिहासिक व त्रिवेणी संगम भूमि कन्याकुमारी नगर में श्री महावीरस्वामी जिनमंदिर में मूलनायक प्रभुजी के दोनों तरफ अतिप्राचीन विक्रम संवत् १५४४ के श्री चन्द्रप्रभ भगवान व श्री नेमीनाथ भगवान का प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग विक्रम संवत् 2076 आषाढ सुदी 2, दि. 4.7.2019 गुरुवार को होगा।

प्रतिष्ठा के मुहुर्त प्रदाता पू. गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में इस जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा सन् 2015 में संपन्न हुई थी।

श्री मोहनचन्दजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने अपने निजी संग्रहालय से भव्य प्रतिमाएँ भेंट कर प्रभु-भक्ति का अनुमोदनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत दोनों प्रतिमाजी के प्रतिष्ठा लाभार्थी क्रमशः एस.एस. मेहता एण्ड कंपनी एवं श्री जतनमलजी तिलोकचंदजी गुलेच्छा परिवार है। विधि विधान बैंगलोर के सुरेन्द्रभाई शाह करायेंगे।

कन्याकुमारी में उपरोक्त जिनालय युक्त धर्मशाला का पता इस प्रकार है-श्री महावीरस्वामी जैन मंदिर दादावाडी, वेस्ट कोवलम रोड़, कन्याकुमारी (तमिलनाडु) फोनः 04652-246240, मो. 9940868183

श्री कान्तिमणि विहार की पांचवी वर्षगांठ

आडगांव-नाशिक 23 जून। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में नाशिक आडगांव स्थित श्री कान्तिमणि विहार की पांचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर पर ध्वजा चढ़ाई गई।

इस कान्तिमणि विहार का निर्माण पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ है। यहाँ विशाल कच्छप पर श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी के साथ साधु-साध्वी विहारधाम, धर्मशाला, भोजनशाला आदि का निर्माण हुआ है।

इस मंदिर दादावाड़ी की प्रतिष्ठा आज से 5 वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की निश्रा में संपन्न हुई थी। पांचवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में ता. 23 जून 2019 रविवार को प्रातः अठारह अभिषेक का आयोजन हुआ। बाद में पूज्यश्री के अभिनंदना - अभिवंदना समारोह के पश्चात् सतरहभेदी पूजा पढ़ाई गई। नौवीं पूजा के बाद शिखर पर ध्वजा चढ़ाई गई। कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्री चन्द्रशेखरजी मोतीलालजी सराफ व श्री धर्मचंदजी धनराजजी रांका परिवार ने यह लाभ प्राप्त किया। ध्वजारोहण के पश्चात् लाभार्थी परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। कान्तिमणि विहार मुख्यमार्ग पर होने से प्रतिवर्ष सभी संप्रदायों के 600 से अधिक साधु-साध्वियों के वेयावच्च का लाभ प्राप्त होता है।

बाड़मेर हाला श्री संघ मंदिर की प्रतिष्ठा सन् 2020 में

आडगांव-नाशिक 25 जून। बाड़मेर हाला श्री संघ मंदिर की प्रतिष्ठा की विनती हाला जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री रविजी रतनपुरा की अध्यक्षता में संघ का प्रतिनिधि मंडल नाशिक में बिराजमान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में पहुंचा। प्रतिनिधि मंडल में श्री रतनलालजी बोहरा, श्री निहालचंदजी जैन, श्री पारसजी बोहरा हाला वाले, श्री कैलाशजी चौपड़ा हाला वाले, श्री प्रीतमजी जैन, श्री मनोजजी गोलेच्छा हाला वाले शामिल थे।

प्रतिनिधिमंडल ने श्री संघ की साधारण सभा में हुए निर्णय के अनुसार बाड़मेर में बन रहे जिनमंदिर-दादावाड़ी की प्रतिष्ठा कराने की पूज्यश्री से भावभीनी विनंती की। उन्होंने कहा- आपकी सानिध्यता में चल रहे जिनमंदिर का कार्य पूर्ण होने को है। चातुर्मास के बाद वहाँ पधारकर प्रतिष्ठा संपन्न करानी है।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर चातुर्मास में शुभ मुहूर्त्त देने की घोषणा की। सकल श्री संघ में परम हर्ष का वातावरण छा गया। प्रतिष्ठा के संबंध में प्रतिनिधि मंडल से विस्तार से चर्चा की गई।

जय जिनेन्द्र रेडियो का उद्घाटन

आडगांव-नाशिक 23 जून। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. के आशीर्वाद से नाशिक निवासी श्री धनंजय जैन व सौ. प्रीति जैन द्वारा जैन धर्म का पहला जैन रेडियो जयजिनेन्द्र के नाम से प्रारंभ किया गया।

ता. 23 जून को कान्ति मणि विहार में आयोजित कार्यक्रम में वीरायतन राजगृही के महामंत्री श्री टी.आर. डागा, श्री प्रकाशजी कानूगो ने यह उद्घाटन किया।

इस रेडियो स्टेशन से 24 घंटे प्रवचन, जैन स्तवन आदि का प्रसारण किया जायेगा। इसके लिये जयजिनेन्द्र रेडियो का एप आपको डाउनलोड़ करना होगा।

मोकलसर में गुलेच्छा आराधना भवन का उद्घाटन 11 जुलाई को

मोकलसर 11 जुलाई। श्री हीराजी धुड़ाजी गुलेच्छा पावटियावाला परिवार द्वारा मोकलसर नगर में नवनिर्मित श्री हीराजी गुलेच्छा जैन आराधना भवन का भव्य उद्घाटन 11 जुलाई को होगा। उद्घाटन समारोह का पावन सानिध्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या विदुषी साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा का प्राप्त होगा।

मोकलसर में इस वर्ष का चातुर्मास साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का है। साध्वीवृंद का चातुर्मास प्रवेश भी इसी दिन भव्यातिभव्य रूप से संपन्न होगा।

भव्य रूप से निर्मित इस विशाल आराधना भवन का निर्माण शा. चुन्नीलाल, निर्भयलाल, संपतराज, भंवरलाल, कांतिलाल, रमेशकुमार गुलेच्छा परिवार बैंगलोर, सूरत, अहमदाबाद द्वारा हुआ है। श्री मोकलसर जैन संघ के आदेश से इस वर्ष के चातुर्मास का सम्पूर्ण लाभ भी गुलेच्छा परिवार को प्राप्त हुआ है।

खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि आराधना भवन निर्माण कर गुलेच्छा परिवार ने वैयावच्च का अनूठा लाभ लिया है। आराधना भवन संयम भावों का पोषण तथा संयम सुरक्षा के लिए कवच है।

खरतरगच्छाधिपतिश्री ने कहा कि इस आराधना भवन में चातुर्मास होंगे, धर्म साधना होगी। क्रिया-विधान होगा। यही इसका सुफल है। जिनशासन की शोभा बढ़ोतरी के कार्य करके जीवन सार्थक करने पर खरतरगच्छाधिपतिश्री ने गुलेच्छा परिवार को शुभकामनाएं प्रदान की। दि. 11 जुलाई को आराधना भवन उद्घाटन तथा चातुर्मास प्रवेश के कार्यक्रम में पधारने के लिए मोकलसर संघ तथा गुलेच्छा परिवार ने सभी सकल संघों से भावभरी विनती की है।

प्रेषक- गुलेच्छा परिवार मोकलसर

नंदुरबार में बड़ी दीक्षा संपन्न

नंदुरबार 6 जून। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न विपुल साहित्य सर्जक मुनि श्री मनितप्रभसागरजी, मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. तथा साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी, साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की सानिध्यता में नूतन दीक्षित नंदुरबार नगरी के कुलदीपक मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा. की बड़ी दीक्षा आनंद और उल्लास के साथ संपन्न हुई।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने छोटी और बड़ी दीक्षा के भेद को समझाते हुए पंच महाव्रतों के संदर्भ में वर्णन किया और लोगों को छोटे-छोटे व्रत-नियम से जोड़ा। कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों- सूरत, खेतिया, खापर, अक्कलकुवा, दोंडाइचा से पधारें। इसी दौरान पंन्यास प्रवर श्री चंद्रशेखरविजयजी म. के शिष्यरत्न मुनि श्री ज्ञानहंसविजयती म. की भी सानिध्यता प्राप्त हुई।

प्रेषक- मुमुक्षु रजत सेठिया

खानदेश में प्रवास की सुवास

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरि जी म.सा. के शिष्यरत्न विपुल साहित्य सर्जक मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., मुनि श्री विरक्तप्रभासागरजी म.सा., मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा. नंदुरबार में एक माह के प्रवास के पश्चात् खेतिया पधारें। खेतिया में पूज्य मुनिश्री का 9 दिवस का प्रवास रहा। 12 जून 2019 को नमिनाथ दादा के मंदिर की वर्षगांठ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूज्य श्री द्वारा 'समय ही जीवन की सबसे बड़ी पूँजी' एक ही विषय पर प्रवचन रहा। दोपहर में स्वाध्याय की क्लासेस पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी और मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी द्वारा ली गई तथा रात्रि में भी पुरुष वर्ग के लिए स्वाध्याय क्लासेस के दौरान अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने व्रत-नियम अंगीकार कर अपनी जीवन-दशा को बदला। प्रवास की भारी विनंती होने पर भी समय के अभाव में 9 दिन के प्रवास के पश्चात् पूज्यश्री का मंदाणा की ओर विहार हुआ।

दो दिन प्रवास हेतु मंदाणा संघ का तीव्र निवेदन था। पर अनुकूलता न होने से दोपहर प्रवचन के पश्चात् पूज्यश्री ने शहादा नगर की ओर कदम बढ़ाये। शहादा में तीन दिवस की स्थिरता रही। जिसके अन्तर्गत प्रातः प्रवचन और दोपहर क्लास भी निरंतर गतिमान् रही। साथ ही साथ पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री के दीक्षा दिवस पर सामूहिक सामायिक का आयोजन हुआ। सामायिक के विषय में समझाते हुए लोगों को सामायिक करने के चच्चखाण दिय। पूज्य मुनिश्री एवं मुनि महितप्रभ जी ने पूज्यश्री के गुणों की महिमा प्रस्तुत की। दोपहर में प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। अतीव विनंती होने पर भी मुनिवर रूक नहीं पाये। तत्पश्चात् पूज्यश्री सारंगखेड़ा होते हुए दोंडाइचा पहुँचे। दोंडाईचा में प्रवास गतिमान है।

प्रातः प्रवचन की मधुर मनभावनी धारा बह रही है। परमात्मा महावीर के जीवन-दर्शन का पावन विवेचन चल रहा है। और दोपहर में तत्त्वज्ञान की क्लास चल रही है। प्रवचन के दौरान पूज्यश्री ने वीर जन्म कल्याणक-वरघोड़े के दौरान मार्ग में खाद्य-पेय पदार्थों के त्याग का नियम उपस्थित जन समूह को दिया। अनेक लोगों ने उस दिन एकासन तप करने का नियम लिया।

प्रेषक- मुमुक्षु रजत सेठिया

केयुप शाखाओं का गठन

केयुप मालेगांव

मालेगांव 30 जून। खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की निश्रा में मालेगांव में बाड़मेर श्री संघ के युवाओं की बैठक हुई जिसमें 50 से अधिक सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से खरतरगच्छ युवा परिषद मालेगांव शाखा के पुनर्गठन का निर्णय लिया गया। पूज्य गुरुदेवश्री ने केयुप के संबंध में पूरी जानकारी दी व उद्देश्य बताएं। सर्वसम्मति से श्री सतीष मेहता को अध्यक्ष, कैलाश छाजेड को उपाध्यक्ष, सुरेश तातेड को सचिव, जितेंद्र सिंघवी महावीर को सहसचिव तथा दिनेश वडेरा को कोषाध्यक्ष चुना गया। पूज्यश्री ने मंगल आशीर्वाद दिया।

केयुप नासिक

आडगांव-नासिक 23 जून। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रसूरीश्वरजी म.सा. के दीक्षा दिवस समारोह में नाशिक केयुप शाखा के गठन की घोषणा की गई। शीघ्र ही सभी युवाओं की बैठक में कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा। कार्यकारिणी सदस्यों को अग्रिम बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

केयुप मैसूर

मैसूर 30 जून। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के आशीर्वाद से एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति के अध्यक्ष एवं मंत्री की सहमति से कार्यसमिति के सदस्यों की उपस्थिति में मैसूर श्रीसंघ की आदेश से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा मैसूर का गठन किया गया। श्री उत्तमचन्दजी गुलेच्छा को अध्यक्ष व श्री हितेशजी पालरेचा को मंत्री पद पर मनोनीत किया गया। सभी कार्यकारिणी सदस्यों को बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

बालोतरा में आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न

बालोतरा 12 जून। पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा एवं पूजनीया साध्वीवर्या श्री हेमरत्नाश्रीजी म., साध्वी जयरत्नाश्रीजी म., साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म. की सानिध्य में श्री बाड़मेर जैन खरतरगच्छ दादा श्री जिनकुशलसूरि ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित उपाश्रय (आराधना भवन) का भव्य उद्घाटन दिनांक 12 जून 2019 को संपन्न हुआ।

उद्घाटन का पुण्य लाभ श्री बंशीधरजी प्रकाशचंदजी मनीषकुमारजी प्रणव एवं समस्त धारीवाल परिवार चौहटन-बालोतरा वालों ने लिया।

पूज्य उपाध्याय प्रवरश्री की निश्रा में लाभार्थी परिवार के निवास स्थान से शोभायात्रा सकल संघ के साथ आयोजित हुई और चतुर्विध संघ की साक्षी से उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में सभी लाभार्थी परिवारों का बहुमान कर अनुमोदना की गई।

इस अवसर पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. ने उपाश्रय को संस्कारों का धाम बताकर धार्मिक आराधनाओं में विशेष प्रगति लाने का अनुरोध किया और उपाश्रय निर्माण में लगे हुए कार्यकर्ताओं के लगन की प्रशंसा की।

पूज्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. ने उपाश्रय को सच्चा घर बताते हुए कहा कि संसार का घर पाप का स्थान है जबकि उपाश्रय धर्म का, संसार का घर बंधन गृह है तो उपाश्रय निर्जरा गृह, संसार का घर डूबाने वाला है तो उपाश्रय तिराने वाला है।

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा नेपाल में जैन मंदिर निर्माण हेतु पहल

नेपाल के जनकपुर राज्य के परसा (पार्श्वनाथ शब्द से जुड़ा) जिला में मधुबन गांव में एक अतिप्राचीन मंदिर के अवशेष मिले हैं जिसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की खंडित मूर्ति स्थापित है।

गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. को इसकी जानकारी उनकी आज्ञानुवर्तिनी साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म. सा., साध्वी डॉ. प्रियलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के द्वारा मिली एवं गच्छाधिपति के निर्देशानुसार पेढ़ी के महामंत्री श्री पदमजी टाटिया ने नेपाल का दौरा किया।

नेपाल के दो मुख्यमंत्री, क्षेत्र के मेयर, विधायक, अटॉर्नी जनरल एवं अनेक अधिकारियों के संग मंदिर स्थल का निरीक्षण किया एवं मंदिर निर्माण के विषय में विचार विमर्श किया। राज्य के मुख्यमंत्री एवं अटॉर्नी जनरल ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदीजी ने अपनी गत नेपाल यात्रा के दौरान जैन सर्किट के बारे में विचार रखे थे। पेढ़ी इस संदर्भ में भारत सरकार व नेपाल सरकार के माध्यम से पार्श्वनाथ मंदिर के निर्माण का प्रस्ताव रख रही है।

आने वाले समय में कानूनी प्रक्रिया के अंतर्गत उचित समझौते के बाद निर्माण कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा। पदमजी टाटिया ने जनकपुर एवं वीरगंज के जैन समाज के सदस्यों के साथ भी विचार विमर्श किया। इस संदर्भ में वीरगंज के श्री अशोकजी वैद का सराहनीय सहयोग रहा।

पादरु जैन दादावाड़ी की 32वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास से सम्पन्न

पादरू 16 जून। कुंडल रोड़ पर स्थित श्री शीतलनाथ भगवान एवं जिनकुशलसूरि दादावाड़ी का 32वां ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

दादावाडी ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष कैलाश संखलेचा ने बताया कि इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम भगवान शीतलनाथजी के शिखर पर की ध्वजा के लाभार्थी श्री वंशराज जुगराज संखलेचा व दादा गुरुदेव के ध्वजारोहण के लाभार्थी हरखचंद सावलचंद संखलेचा परिवार ने चढाई। सतरभेदी पूजा को विधिवत पढाई गई।

इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष कैलाश संखलेचा, जुगराज, गणेश संखलेचा, वगतावरमल बाफना, रमेश जैन, सुरेंद्र हुंडिया, महेन्द्र भंडारी, समाजसेवी भंवरलाल सिंघवी कटारिया, जसराज बाफना, राजु नाहटा, सुमेरमल गोठी, यश सहित अनेक जनों ने भाग लिया। अंत मे अल्पाहार की व्यवस्था रखी गई।

बाड़मेर में चातुर्मास

ईडर 11 जून। पू. श्री मोहनलालजी म. के समुदायवर्ती व्याख्यान वाचस्पति पू. जयानंदमुनिजी म.सा. के शिष्य गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनिजी म. आदि ठाणा 4 एवं सुदीर्घसंयमी पू. साध्वी कुशलश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी विरतीयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 का चातुर्मास बाड़मेर नगर में होगा। दि. 11 जून को ईडर में जय बोली गई।

नंदुरबार नगर में ध्वजारोहण

नंदुरबार 24 मई। श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं मणिधारी जिनचन्दसूरि दादावाड़ी की चतुर्विध संघ के साथ 16वां ध्वजारोहण का भव्य कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ!

खरतरगच्छाधिपति प्रतिष्ठाचार्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 एवं पू. महत्तरा पदविभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म. की विदुषी शिष्या नंदुरबार जिनमन्दिर दादावाड़ी एवं आराधना भवन प्रेरिका पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु म.) पू. धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में यह आयोजन किया गया।

सुबह 6 बजे प्रभातिया, 9 बजे ध्वजारोहण के लाभार्थी परिवारों द्वारा महावीरस्वामी जिनालय से पूज्य गुरुदेव एवं गुरुवर्याजी के साथ में दादावाड़ी के प्रांगण में नाचते झूमते हुऐ सकल श्री संघ के साथ ध्वजारोहण किया। श्री मणिधारी चम्पा महिला मंडल द्वारा दादा गुरुदेव की पढाई गई।

500 से ज्यादा श्रावक श्राविका एवं अध्यक्ष, ट्रस्ट मंडल के सभी सदस्य, खरतरगच्छ युवा परिषद्, श्री मणिधारी चंपा महिला मंडल, बालिका मंडल ने अपनी सेवा प्रदान की।

प्रेषक- प्रकाश चौहान

अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का मालेगांव में पदार्पण

मालेगांव 30 जून। खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं उनके शिष्य पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. के साथ नासिक से 25 जून को विहार कर 30 जून को मालेगांव पधारे। श्री जिनकुशलसूरि बाड़मेर श्रीसंघ द्वारा भव्य सामैया किया गया। संघ में अपार उत्साह देखा गया। चांदवड से विहार में बड़ी संख्या में युवा साथ रहे। श्री वर्धमान स्वामी मंदिर दादाबाड़ी में दर्शन के बाद आराधना भवन में पूज्य श्री का मांगलिक प्रवचन हुआ।

पूज्यश्री ने संघ एकता पर बल देते हुए कहा- मालेगांव श्री संघ को शीघ्र ही सर्वसम्मति से ट्रस्ट मंडल का गठन कर लेना है। पूज्यश्री ने कहा- आप सभी बाड़मेर श्री संघ के हैं और बाड़मेर श्री संघ पर पूज्य गुरुदेवश्री के अपार उपकार है। पूज्यश्री ने विक्रम संवत् 2018 की घटनाओं को सुनाते हुए उपकारों को स्मरण किया जिसे श्रवण कर युवा श्रद्धा से भर उठे।

इस अवसर पर मुनि मयूखप्रभसागरजी म. ने परमात्म-भक्ति और गुरु भक्ति की महिमा समझाइ। गच्छाधिपति आचार्य बनने के बाद पहली बार पधारने पर पूज्यश्री का गुरु पूजन किया गया तथा कामली ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया।

श्री ललितकुमारजी संपतराजजी बोथरा परिवार ने गुरु पूजन का लाभ लिया तथा श्री बंशीधरजी गंगारामजी मेहता मनिता ग्रुप ने कामली ओढाने का लाभ प्राप्त किया। पूज्यश्री का मालेगांव में तीन दिवसीय प्रवास रहा। प्रवचन में बड़ी संख्या में संघ की उपस्थिति रही। पाठशाला ज्ञानवाटिका प्रारंभ करने का निर्णय किया गया। हर रविवार को सामूहिक सामायिक करने का संकल्प लिया गया। तारीख 2 जुलाई को शाम को धूलिया की ओर विहार किया।

श्री छगनलालजी संकलेचा

हैदराबाद 20 मई। संकलेचा रासोणी परिवार के अनमोल रत्न, श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर फीलखाना में चेयरमैन, जहाज मंदिर मांडवला के संस्थापक सदस्य, एवं स्वद्रव्य से महावीरस्वामी जिनालय एवं दादावाडी निर्माता, रासाजी के अंतिम पौत्र श्री छगनलालजी संकलेचा का निधन हो गया। आप सरल स्वभावी एवं देव गुरु भक्त थे। पूजनीय साधु साध्वीजी भगवंतों के प्रति अपार भक्ति रखते थे। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें व परिवार को इस दुखद घड़ी में दुख सहने की शक्ति दे।

जहाज मंदिर परिवार सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

सादर श्रद्धांजलि

समाजसेवी, धर्मनिष्ठ, दानवीर, ब्रह्मसर तीर्थ सहित कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े भियाड़ (बाड़मेर) निवासी श्री मेवारामजी रुघामलजी घीया का स्वर्गवास हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान कर मोक्षगामी बनावे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

भूलसुधार

गत जून 2019 के अंक में पेज संख्या 47 पर इचलकरंजी चातुर्मास प्रवेश की तिथि इस प्रकार पढ़ी जाएं-

वि.सं. 2076 आषाढ सुदि 9, दिनांक 10 जुलाई 2019 शुक्रवार।

त्रुटि के लिए खेद है।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा अनुकम्पा दिवस का आयोजन

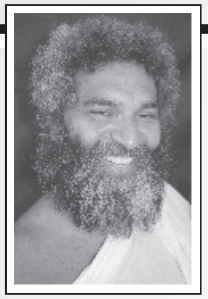

23 जून। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की विभिन्न शाखाओं द्वारा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस को अनुकम्पा दिवस के रूप में मनाया गया। देश भर के 100 से अधिक संघों एवं युवा परिषद् शाखाओं द्वारा इस उपलक्ष्य में मानव सेवा, जीवदया एवं समाज सेवा के वैविध्यसभर आयोजनों की झड़ी लगाई गई। कहीं अन्नदान, जीवनावश्यक वस्तुओं का दान, स्कूली बच्चों को पाठ्य सामग्री का वितरण तो कहीं रेन कोट एवं छत्रियों का वितरण जैसे मानव सेवा के कार्य किए गए। कहीं स्थानीय गौशालाओं में गौवंश को गुड़ - घास, कबूतरों को दाना आदि वितरण कर गौसेवा एवं जीवदया के कार्य किये गए। कई शाखाओं द्वारा निशक्त, दिव्यांग एवं अंधजनों को आवश्यक सामग्री वितरित की गयी। कई शाखाओं द्वारा अस्पतालों एवं अनाथाश्रमों में फल एवं बिस्कुट आदि का वितरण किया गया। कई शाखाओं द्वारा स्नात्र पूजा, सामायिक, चैत्य परिपाटी, सिद्धितप के सामूहिक बियासने का लाभ जैसे धार्मिक उपक्रम किये गए।

इस अवसर पर केयुप की मुंबई शाखा द्वारा नासिक में विराजमान पूज्य गुरुदेवश्री की सानिध्यता में गुरु वंदना, संयम संवेदना का विशेष आयोजन किया गया। साथ ही पूज्य गुरुदेव के 47वे संयम दिवस के दिन विश्व का पहला जैन रेडियो स्टेशन रेडियो जय जिनेन्द्र लॉन्च किया गया। जिसमें 24 घंटे जैन स्तवन नॉनस्टॉप चलेंगे। देशभर की विभिन्न शाखाओं द्वारा किये गए आयोजनों की एक झलक :

1. अहमदाबाद

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में खरतरगच्छ युवा परिषद् की अहमदाबाद शाखा द्वारा महिला परिषद् व बालिका परिषद् के साथ मिलकर 150 से भी अधिक साधर्मिक परिवारों को अनाज की किट वितरित की गयी। कार्यक्रम सिटी वाली दादावाड़ी दादासाहेब की पोल में रखा गया था। कार्यक्रम में युवाओं को उत्साहित करने एवं मार्गदर्शन मिले इस हेतु से रतनलालजी हालावाले, बाबुलालजी लूणिया, दीपचंदजी बाफना, मनीषजी गोलेच्छा, ममताजी बोथरा, राजेश्वरीजी जैन आदि उपस्थित रहे।

2. अक्कलकुआ

केयुप की अक्कलकुआ शाखा द्वारा दीक्षा दिवस के निमित्त वनवासी कल्याण आश्रम के बच्चों को भोजन कराया गया, साथ ही उन्हें नोटबुक एवं पेन का वितरण भी किया गया।

3. इचलकरंजी

पूज्य खरतरगच्छाधिपति, वात्सल्यमूर्ति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म., बहिन म. डॉ साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. का 47वां दीक्षा दिवस श्री मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ के तत्त्वावधान में केयुप इचलकरंजी द्वारा राजस्थानी गौशाला में गायों को गुड़-चारा प्रदान कर अनुकम्पा दिवस के रूप में मनाया गया।

श्री मणिधारी संघ ने कुम्भोजगिरी में पूजनीया साध्वीवृंद की निश्रा में गुणानुवाद सभा

में परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा कि आपका संयम जीवन निष्कंटक बने। आप शतायु हो। आपकी धवल-निर्मल कीर्ति विश्व मे फैले। आपका आशीर्वाद सदा बना रहे। साध्वीवर्या ने आशीर्वचन एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

4. इन्दौर

खरतरगच्छाधिपति सरल स्वभावी आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज के 47वें दीक्षा दिवस पर खरतरगच्छ युवा परिषद् (के यु प) इंदौर शाखा द्वारा आदिनाथ जैन गौशाला में 108 गायों को चारा खिलाया गया।

5. उज्जैन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में अनुकंपा की गई। इसी अनुक्रम में केयुप उज्जैन शाखा द्वारा प्रात:काल उज्जैन की सबसे बड़ी तिलकेश्वर गोशाला में जीवदया का कार्य किया गया। गोशाला में लगभग 150 गायों को चारा आदि खिलाया गया। परिषद् के मनोज कोचर, तरुण डागा, रितेश जैन, रविन्द्र बांठिया, संजय चोपड़ा आदि एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे एवं सभी के द्वारा परम पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेव के दीक्षा दिवस को अनुकंपा दिवस के रूप में हर साल मनाने का संकल्प लिया गया।

6. कोट्टुरु

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा कोट्टुरु द्वारा जे. पी. नगर कोट्टुरु की सरकारी स्कूल के सभी बच्चों को यूनिफार्म वितरण किया गया। आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. के जयकारे के बाद सभी बच्चों को यूनिफार्म भेंट दी गयी। बच्चे बहुत खुश हुए। सभी बच्चों को देख केयुप के सदस्य अभिभूत हो गये थे।

केयुप के प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश चौपडा एवं कोट्टुरु शाखा के अध्यक्ष अशोक धारीवाल, कोषाध्यक्ष रमेश धारीवाल, सचिव राजु चौपडा, रमेश बाफना, महेन्द्र चौपडा, लूणचंद श्रीश्रीमाल, उत्तम तातेड, निर्मल धारीवाल, प्रवीण चौपडा, विनोद धारीवाल, रमेश तातेड, भरत तातेड, नितिन गोलेच्छा, विनोद चौपडा, यश चौपडा आदि सदस्यों की उपस्थिति रही। सभी ने मिलकर दीक्षा दिवस पर आयोजन को सफल बनाया।

7. कोप्पल

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. एवं पूजनीया श्रमणीरत्ना माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. व बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में मन्दिरजी मे सुबह स्नात्र पूजा एवं जरूरतमन्दों को कपड़े वितरण किए गए। श्रीसंघ कोप्पल का एवं महावीरजी संखलेचा का विशेष सहयोग रहा।

8. कोमाखान

बागबाहरा ब्लॉक अंतर्गत स्थित नेत्रहीन फार्च्यून हाईस्कूल कर्मा पटपर में जाकर जैनाचार्य खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहेब की 47वें संयम दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं को दैनिक आवश्यकताओं की सामग्री का वितरण किया गया। छात्र-छात्राओं के मध्य बैठकर भजन कीर्तन के माध्यम से जिनशासन की शान परम पूज्य आचार्य भगवंत की संयम दिवस की अनुमोदना की। इस अवसर पर खरतरगच्छ युवा परिषद् कोमाखान शाखा के युवा साथी नितिन बरमेचा, धैर्य बैद, पंकज बैद, राजा बरडिया एवं सुव्रत बरडिया, अर्हम बरमेचा आदि उपस्थित थे।

9. कोयंबतूर

दि. 24 जून 2019 कोयंबतूर स्थित बोलने व सुनने में असमर्थ बच्चों के शासकीय स्कूल जाकर जैनाचार्य खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहेब की 47वें संयम दिवस के अवसर पर बच्चों को दैनिक आवश्यकताओं की सामग्री का वितरण किया गया। इस अवसर पर खरतरगच्छ युवा परिषद कोयंबतूर शाखा के युवा साथी दीपक नाहटा, प्रकाश बोथरा, राकेश गोलेच्छा, निर्मल गोलेच्छा, विनीत जैन, तरुण गोलेच्छा, पंकज भडगतिया, हेमंत पारेख उपस्थित थे। साथ ही स्थानीय गौशाला में पूज्य गुरुदेवश्रीजी के सुविचारों से सज्जित स्थाई होर्डिंग लगाए गए।

10. खेतिया

खरतरगच्छ युवा परिषद् खेतिया शाखा द्वारा अनुकम्पा दिवस का आयोजन पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूजनीया श्रमणीरत्ना माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. व बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के 47वें संयम दिवस प्रवेश के उपलक्ष्य में जीवदया स्वरूप गौशाला में चारा एवं गुड खिलाने का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सेवा प्रदान करने हेतु सचिव मयूर चोपड़ा, मंत्री योगेश चोपड़ा, सदस्य उमेद पारख, विनय नाहर, दिलीप पारख, जयेश बाफना के साथ संघ के एवं युवा परिषद् के सदस्य उपस्थित थे।

11. चैन्नई

खरतरगच्छ युवा परिषद चेन्नई शाखा द्वारा अनुकंपा दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर चेन्नई में विराजित पूज्य साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में साधर्मिक भक्ति का आयोजन किया गया। प्रवचन प्रभाविका पूज्या मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा ३ एवं पूज्या साध्वी प्रियवंदाश्रीजी म., पूज्या शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा ६ की निश्रा में संयम दिवस अनुमोदनार्थ धर्मसभा का आयोजन श्री चुलै जैन मंदिर उपाश्रय में किया गया। सभा में पूज्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. को उनकी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि दी। सभा में गच्छ के कई आगेवानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सभा के पश्चात 60 साधर्मिक भाइयों की साधर्मिक भक्ति की गयी। केयुप प्रेरक परम उपकारी पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के 47वें संयम वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में केयूप चेन्नई और गुरु भक्तों ने चूलै आदिनाथ ट्रस्ट में हो रहे वर्षीतप के तपस्वियों को बियासना 24/6/19 को कराने का लाभ भी लिया।

12. जोधपुर

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में केयुप जोधपुर द्वारा मानव सेवा का कार्यक्रम हुआ।

13. तिरुपुर

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में तिरुपुर शाखा द्वारा गरीब एवं नि:शक्त जनों के लिए अन्नदानम् का आयोजन किया गया। जिसमें जरूरतमंदों को भोजन कराया गया।

14. दिल्ही

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में केयुप-दिल्ली शाखा की ओर से जून माह की तपती गर्मी में 470 जरूरतमंदों को पादुकाएं वितरित की गयी।

15. दुर्ग

खरतरगच्छ युवा परिषद दुर्ग शाखा द्वारा श्री छातागढ़ गौशाला मे गुड़, चारा वितरण कर जीवदया का कार्य किया गया। सभी सदस्य उपस्थित थे। जिसमें प्रमुख रूप से संघ के महामंत्री एवं खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री पदमजी बरडिया, राष्ट्रीय वेयावच्च प्रभारी निर्मल लोढा, दुर्ग शाखा के अध्यक्ष प्रवीण बोथरा, महामंत्री दीपक चोपड़ा, उपाध्यक्ष मयंक बोथरा, कोषाध्यक्ष टीकम चोरडिया, आशीष बोहरा, गौरव कोठारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

16. धमतरी

केयुप धमतरी शाखा द्वारा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में और पूज्या आत्मरुचिश्रीजी म. के प्रथम दीक्षा दिवस पर जरुरतमंदों को रैनकोट और छाता का वितरण किया गया।

17. धोरीमन्ना

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद धोरीमन्ना शाखा द्वारा रविवार दि. 23/6/19 को राजकीय चिकित्सालय में फल वितरण का आयोजन किया गया।

18. नंदुरबार

पूज्य खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्रीजिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें दीक्षा दिवस एवं पूज्या साध्वी चारुलताश्रीजी म. के 43वें जन्म दिवस के उपलक्ष में दादावाड़ी में स्नात्र पूजन का आयोजन किया गया। जिसके लाभार्थी हितेशकुमार जवेरीलालजी बाफना परिवार नंदुरबार थे। साथ ही दोपहर में सिविल हॉस्पिटल में मरीजों को खाना खिलाया गया। जिसका लाभ एक गुरुभक्त परिवार ने लिया। आयोजन की सफलता में श्री जिनकुशल सामयिक मंडल का भी पूर्ण योगदान रहा।

19. नासिक

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में नासिक श्री संघ एवं केयुप महाराष्ट्र प्रान्त द्वारा पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सुंदर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूज्य गुरुदेव की सानिध्यता में गुरु वंदना, संयम संवेदना का विशेष आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सूत्रधार विक्कीभाई मुंबई थे। सम्पूर्ण आयोजन का लाभ श्रीमती कमलादेवी मोतीलालजी सराफ परिवार ने लिया था।

20. बाडमेर

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के 47वें संयम दिवस पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् शाखा बाड़मेर एवं खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा बाड़मेर के तत्त्वावधान में दि. 24 जून को राजकीय अस्पताल में फल वितरण किया गया, इसके बाद 7:30 बजे सुमेर गौशाला में गायों को हरा चारा व गुड़ देकर जीवदया का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

21. बालोतरा

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में केयुप बालोतरा शाखा द्वारा जीवदया एवं मानव सेवा का कार्य किया गया।

22. बीकानेर

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज के दिनांक 24/6/19 को 47वें संयम दिवस के आलम्बन में खरतरगच्छ युवा परिषद्, बीकानेर द्वारा रविवार 23/6/19 को ज्ञान वाटिका के बच्चो को फलवृद्धि पार्श्वनाथ, मेड़ता रोड की यात्रा बस द्वारा करवायी गयी। वहाँ पर सवेरे स्नात्र पूजा तत्पश्चात् प्रवर्तिनी महोदया श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. का प्रवचन हुआ। दोपहर दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा पढाई।

23. बेंगलुरु

श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं श्री जिनदत्त-कुशलसूरि जैन सेवा एवं संगीत मंडल द्वारा पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. एवं पूजनीया श्रमणीरत्ना माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. व बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के 47वें संयम दिवस प्रवेश के उपलक्ष्य में दी कर्नाटक वेलफेयर एसोसिएशन फॉर ब्लाईन्ड आश्रम में खाने की राशन सामग्री, फल फ्रूट्स वितरण किया गया। बेंगलुरू शाखा के लिये सहयोग संघवी कुशलराज, उत्तमकुमार, ललितकुमार गुलेच्छा परिवार मोकलसर वालों की तरफ से प्राप्त हुआ।

आश्रम में सेवा प्रदान करने हेतु ललित डाकलिया, मंत्री शशी चौपड़ा, विकास खटोड़, भरत कोठारी, मनीष मेहता, प्रतीक गुलेच्छा, शीतल गुलेच्छा, विनोद बाफना, कल्पेश लुंकड़, अजय पारख, हेमन्त गुलेच्छा, नीता गुलेच्छा, जिनल, दिया, रियांशी, भविक के साथ अनेक सदस्य उपस्थित थे।

24. ब्यावर

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में ब्यावर में स्कूली छात्रों को स्कूल बैग का वितरण किया गया।

25. भादरेश

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में भादरेश शाखा द्वारा स्थानीय गौशाला में गौसेवा का कार्य किया गया।

26. भीलवाडा

परम पूज्य गुरुदेव के 47वें दीक्षा दिवस को अनुकंपा दिवस के रूप में समस्त भारत में विभिन्न प्रकार से सेवाओं के द्वारा मनाया गया! इसी अनुक्रम में केयूप भीलवाड़ा शाखा द्वारा प्रात:काल भीलवाड़ा के सबसे बड़े महात्मा गांधी चिकित्सालय में रोगियों को फल वितरण किया गया। उसके पश्चात हरणी महादेव स्थित वृद्धाश्रम में बुजुर्गों को फल एवं भोजन सामग्री एवं वस्त्र वितरण किया गया।

सलाहकार अनिलजी छाजेड़, ट्रस्टी अरुणजी कोठारी, केयुप के कोषाध्यक्ष धीरजजी सुराणा, महामंत्री निलेश भंडारी, सहसचिव दिनेशजी गोलेछा, सदस्य अनिलजी कोठारी, मोहित जैन, विनोद जैन, कुशल गुगलिया, लविश कर्णपुरिया आदि समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी के द्वारा पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेव के दीक्षा दिवस को अनुकंपा दिवस के रूप में हर साल मनाने का संकल्प लिया गया। भीलवाड़ा शाखा द्वारा 47वें दीक्षा दिवस के निमित्त हर माह के अन्तिम रविवार को सदस्यों के साथ वृद्धाश्रम में मनाने का संकल्प लिया गया।

27. मुंबई

केयुप मुंबई शाखा ने पूज्य गुरुदेव का दीक्षा दिवस नासिक में गुरुदेव की निश्रा में मनाया। इस अवसर पर वहां की नेत्रहीन शाला के बच्चों को गर्म बर्तन वितरित किए गए।

साथ ही कांति मणि विहार धाम के सम्पूर्ण स्टाफ को वस्त्र एवं घड़ी वितरित की गयी।

28. रायपुर

पूज्य खरतरगच्छ के राजा, अवन्ति तीर्थोद्धारक मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें दीक्षा दिवस पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा रायपुर द्वारा जीवन ज्योति आश्रम (मानसिक रूप से असक्षम) बालिका आश्रम में सेमि किट (प्रसाधन वस्तु) एवं बिस्किट आदि का वितरण किया गया।

29. शहादा

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में 100 से अधिक सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। साथ ही अत्यंत दिन-हीन बच्चों को ज्ञान के उपकरणों का अनुकम्पा रूपी भेंट कार्यक्रम खरतरगच्छ युवा परिषद शहादा द्वारा सम्पन्न हुआ।

30. सिकंदराबाद

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में सिकंदराबाद शाखा द्वारा के उपलक्ष्य में गौशाला में गायों को हरा चारा एवं गुड़ खिलाया गया।

31. सूरत-पाल

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति सरलमना आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के संयम दिवस पर गौसेवा का आयोजन केयुप पाल शाखा सूरत के द्वारा किया गया।

32. हुबली

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 47वें संयम वर्ष प्रवेश दिवस के उपलक्ष में केयुप हुबली शाखा द्वारा गायों को चारा खिलाकर कर जीवदया का कार्य किया गया। इस आयोजन में केयुप हुबली शाखा द्वारा के सभी सदस्य उपस्थित थे।

साथ ही अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की नागौर, गुवाहाटी, सिलचर, तेजपुर, फलौदी, लोहावट, तिरपात्तुर, इरोड़, मन्दसौर, नीमच, बड़वाह, खापर, बिजयनगर, सांचोर, पचपदरा, झीणजिणयाली, जालोर, राजनांदगांव, अंकलेश्वर, सूरत शहर, गदग, नवसारी, जैसलमेर, जयपुर, अजमेर ग्रामीण, दोंडाईचा, चौहटन, रिंगनोद, हैदराबाद, सेलम्बा आदि शाखाओं में भी मानव सेवा, जीवदया और समाज सेवा के विभिन्न आयोजन किया गए।

ऐसे परम गुरुदेव जिन्होंने परिषद् जैसे समाजसेवी संगठन को निर्माण किया, जो आज पूरे भारतवर्ष में महक रहा है! यह उनकी ही कृपा और आशीर्वाद है।

केयुप की एक आवाज... सभी शाखाएं एक साथ...

प्रेषक- धनपत कानुंगो, राष्ट्रीय संयोजक (प्रसार प्रचार),
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, केन्द्रीय समिति।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर अपने मकान की पांचवीं मंजिल पर था। खिड़की से नीचे देख रहा था। सड़क पर उसकी नजर पड़ी।

उसे सड़क पर चांदी का एक सिक्का पडा हुआ नजर आया। बहुत चमक रहा था। उसने चारों ओर निगाहें डाली। कोई नहीं था। वह सिक्का प्राप्त करने के लिये शीघ्रता से नीचे उतरने लगा।

चौथी मंजिल पर आकर उसने नीचे देखा तो पाया कि सिक्का वहीं पडा है। कोई ले नहीं गया है। पर उसे लगा कि चांदी का सिक्का तो नहीं है। हाँ! दस रूपये का सिक्का लग रहा है। चलो! आज के चाय और नाश्ते का तो इन्तजाम हुआ।

जल्दी से एक मंजिल उतरकर तीसरी मंजिल से देखा तो उसे लगा कि सिक्का पांच रूपये का लगा। चलो नाश्ते का न सही, कम से कम चाय तो मिल ही जायेगी। तीव्रता से दूसरी मंजिल पर आकर देखा तो लगा कि एक रूपये का सिक्का है। कोई बात नहीं, जितना मिला उतना अच्छा!

यह सोचकर जल्दी दौड़कर सिक्के के पास पहुँचा और 10 कदम दूर से छलांग लगाकर हाथ से झपट लिया। हाथ में लेते ही चिल्लाया–

लोग कितने नालायक है कि दूध की बोतल का ढक्कन इस प्रकार सड़क पर फेंक देते हैं और मुझे पांचवीं मंजिल से नीचे उतार देते हैं।

हकीकत में वह सिक्का नहीं बोतल का ढक्कन था। जो दूर से सिक्के की तरह लगता था।

संसार के भ्रम-जाल में हम इसी तरह फंसते हैं। दिखाई देता है चांदी का सिक्का! भ्रमवश उसे पाने के लिये दौड़ते हैं पर जब मिलता है तब हाथ में ढक्कन आता है। संसार के इस यथार्थ को समझ कर हमें जागना है।

स्वाध्यायी आमंत्रित कीजिए

आपके श्रीसंघ में पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना करवाने के लिए शीघ्र ही संपर्क करावें।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की प्रेरणा व मार्गदर्शन में स्वाध्यायी तैयार किए गए हैं। आप अतिशीघ्र पूज्य गुरुदेवश्री से संपर्क करावें।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज

श्री शीतलनाथ जैन मंदिर संस्थान

लेन नं. 1, तेली गली नं. 2, **पो. धुलिया**-424002 (महा.) मुकेश-7987151421, व्हाट्सप-9825105823

Email: jahajmandir99@gmail.com

कान्ति-मणि विहार नाशिक में अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का संयमोत्सव मनाया गया 23 जून 2019

जैन पद्मश्री विभूषित संघवी

श्रीमान् पुखराजजी छाजेड़

को

पांचवी पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

स्वर्गवास : 12–07–2014

श्रद्धावनत

माताजी सुआबाई पूनमचंदजी छाजेड़, धर्मपत्नि भवानीदेवी पुखराजजी छाजेड़

पुत्र-पुत्रवधु : राजेश-सौ. मधुदेवी, सुरेश-सौ. इंदिरादेवी, दिनेश-सौ. चन्द्रादेवी

पौत्र : मितेश, ध्रुव, लक्षित, युग, दक्ष

पुत्री-जवांई : सौ. मंजुदेवी-राकेशजी बाफना, पौत्री-जवांई : सौ. काजोल-सिद्धान्तजी सुराणा

पादरु-चैन्नई-मुम्बई-दिल्ली

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

With Best Compliments from :

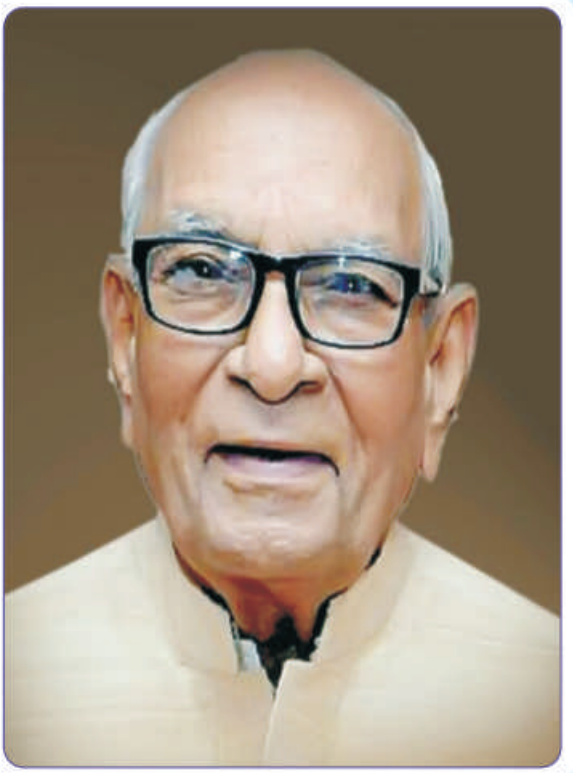

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408